47/80

Madhu

Bharathi College of Education

an abode of education

Vill. Kandri Post Mandar Ranchi - 835214 Jharkhand
Ph. 0651-6999116 Mob. 09973141116, 9334441116

Name of Examination : 1st Semester Examination (2019)

विद्यार्थी का नाम NUTAN TOPPO

कक्षा वर्ग क्रमांक 41 Session सत्र 2018 - 20

विषय Learning and Teaching

Course - 3 लिपि देवनागरी

तिथि 7/1/2019 पाली प्रथम पाली

Invigilator's Signature

Ans (4) अधिगम वक्र -

प्रत्येक व्यक्ति की अधिगम की गति या सीखने की गति अलग - अलग होती है। कोई व्यक्ति किसी कार्य कार्य को बहुत जल्दी सीख जाता है या कोई व्यक्ति उसी कार्य को सीखने में समय लगाता है अर्थात हम यह कह सकते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति की सीखने की गति अलग - अलग होते हैं यदि हम इस गति को ग्राफ पेपर पर अंकित करते हैं तो हमें एक वक्र प्राप्त होगा जिसे अधिगम वक्र वक्र या सीखने का

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

वक्र कहते हैं। अधिगम वक्र मुख्यतः दो बातों पर जो निम्नलिखित हैं निर्भर करती है —

(i) व्यक्ति की शारीरिक क्षमता

(ii) व्यक्ति की बुद्धि और मानसिक शक्ति है।

किसी व्यक्ति की शारीरिक क्षमता अधिक होगी वह अधिगम को बहुत जल्दी सीखेगा। अर्थात् सीखने की गति प्रत्येक व्यक्ति में अलग पाई जाती है।

अधिगम वक्र मुख्यतः जो निम्नलिखित है —

(i) समान निष्पादन वक्र

(ii) वर्धमान निष्पादन वक्र (धनात्मक वक्र)

(iii) ह्रासमान निष्पादन वक्र (ऋणात्मक वक्र)

(iv) एस - आकारीय निष्पादन वक्र

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(i) समान निष्पादन वक्र - समान निष्पादन वक्र को एक सरल रेखीय वक्र भी कह सकते हैं, इस वक्र में हमें एक सरल रेखा प्राप्त होती है अर्थात् हम जितना प्रयास करते हैं सीखने का प्रतिशत भी बराबर या उतना ही प्राप्त होता है। जैसे :- यदि हम 10 % प्रयास करते हैं तो हमारी सीखने का प्रतिशत भी 10 % ही होगा। समान निष्पादन वक्र को निम्न ग्राफ द्वारा प्रदर्शित कर सकते हैं -

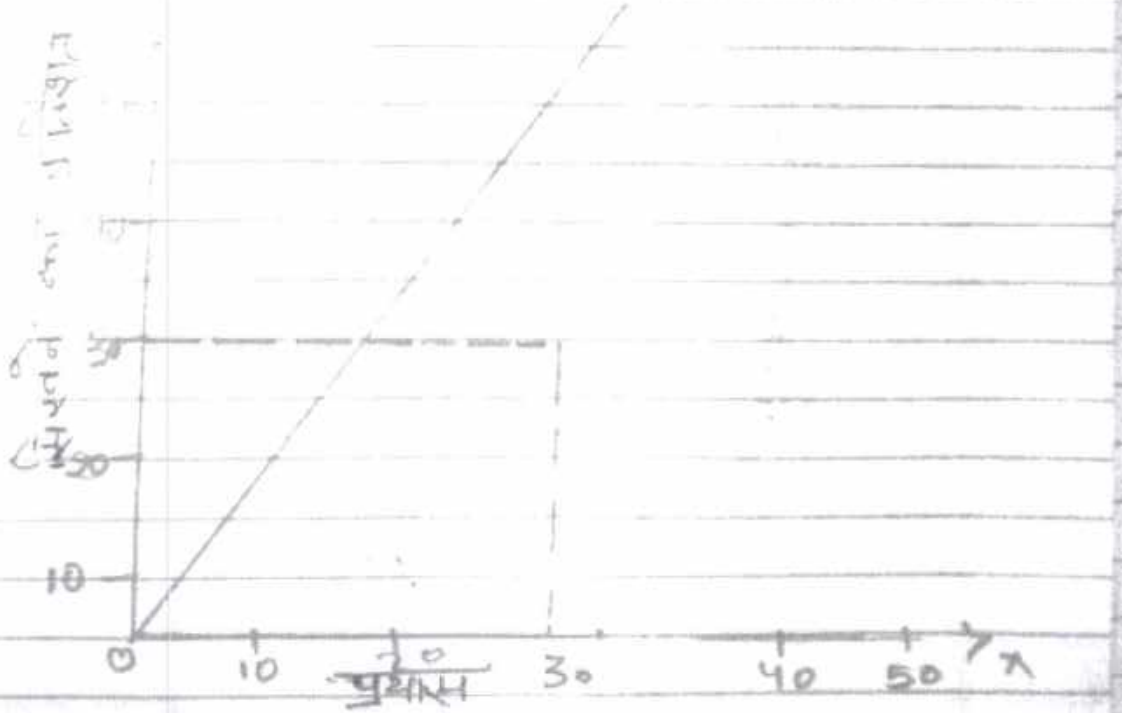

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(ii) वर्धमान निस्पादन वक्र — वर्धमान निस्पादन वक्र में सामान्यत: सीखने की गति प्रारंभ में धीमी होती है और प्रयास करने के बाद इसकी गति में तेजी आ जाती है अर्थात इसका कारण यह भी हो सकता है कि बालक प्रारंभ में रुचि नहीं लेता है लेकिन समझने के बाद उसमें गति आ जा जाती है और उसमें सीखने की गति तेज हो जाती है।

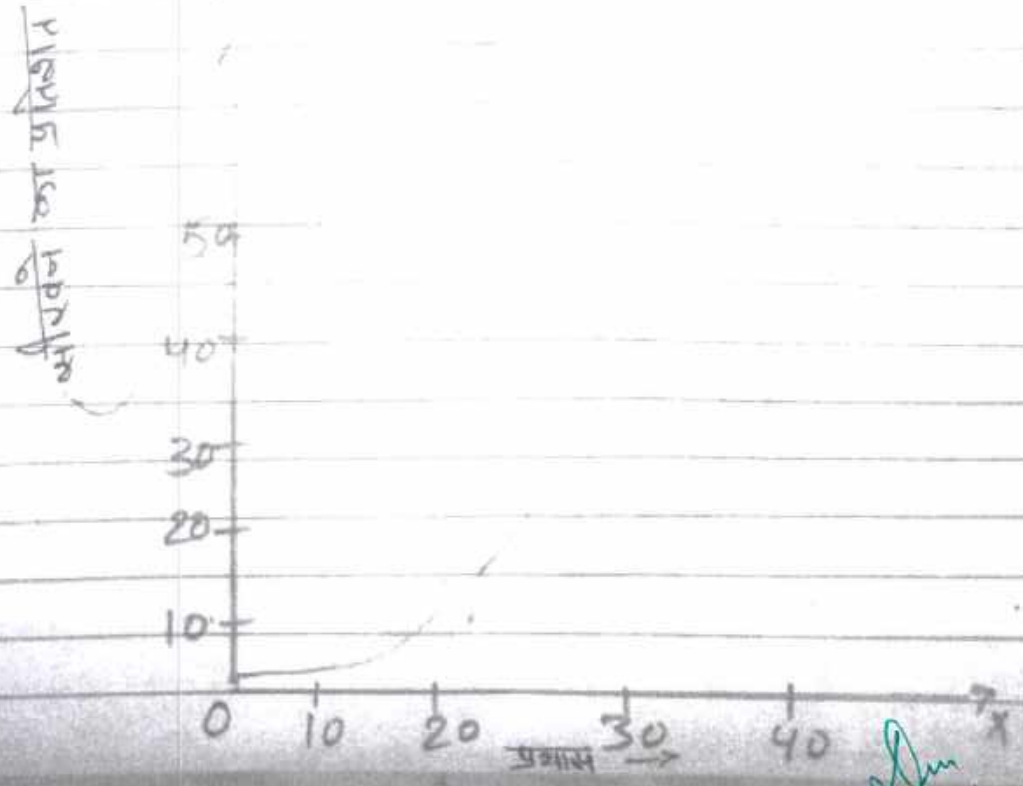

Principal
Bharathi College of Education
Mandar, Ranchi

(iii) ह्रासमान निष्पादन वक्र – इस वक्र को ऋणात्मक वक्र भी कहा जाता है इस वक्र में सीखने की गति प्रारंभ में तेज होती है और धीरे – धीरे इसमें धीमी गति आ जाती है इसका कारण यह हो सकता है कि बालक प्रारंभ में विषय को समझने में या पढ़ने में रुचि लेता है और बाद में उसे रुचि नहीं होती है तो उसकी अधिगम की प्रक्रिया धीमी हो जाती है। इस वक्र का ग्राफ निम्नलिखित रूप में व्यक्त कर सकते हैं।

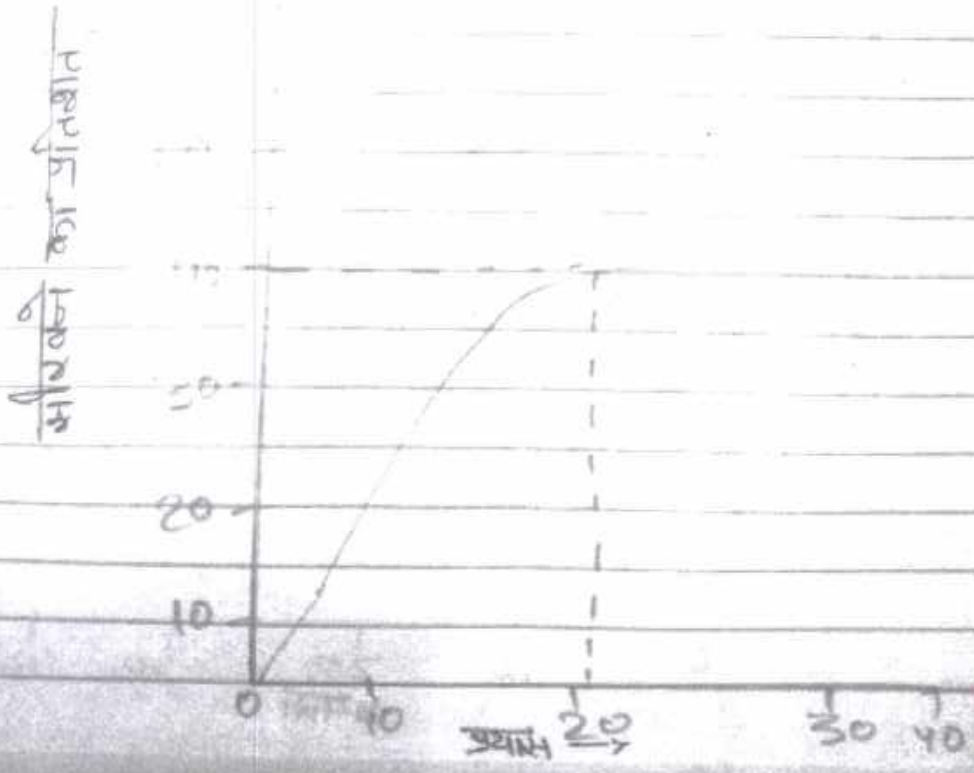

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(iv) रूप - आकारीय निष्पादन वक्र –

इस वक्र का आकार रस्से आकार का होता है जिसके कारण इस वक्र को रस्सा आकारीय निष्पादन वक्र कहते हैं। इसमें आदिगम की प्रक्रिया धीमी होती है फिर तेज होती है अंत में पुनः धीमी हो जाती है जिसके कारण इसे रस्सा आकारीय निष्पादन वक्र कहते हैं।

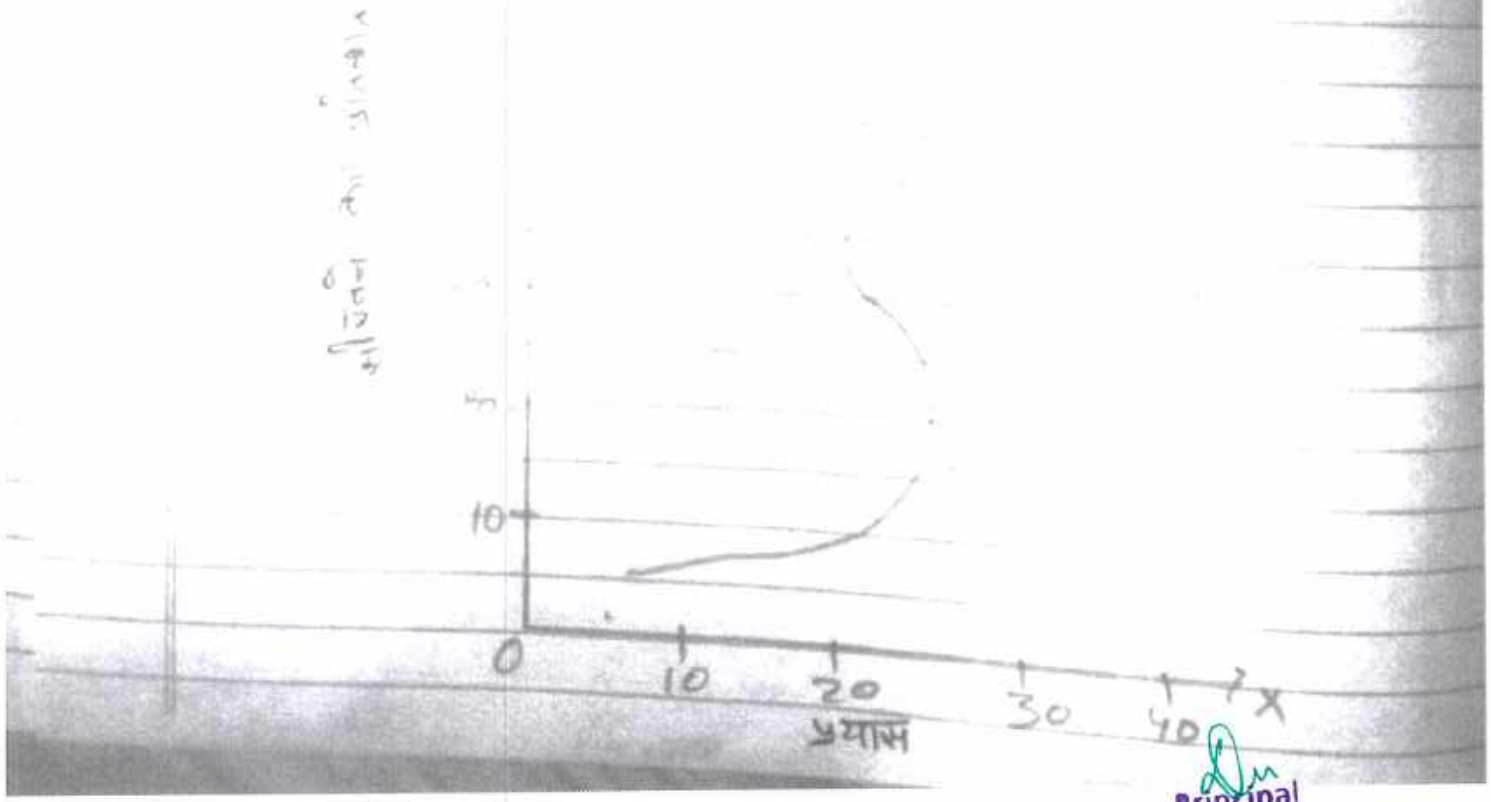

Principal
Bharathi College of Education
Kanchi, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष - अधिगम वक्र या सीखने का वक्र के बारे में अध्ययन करके और इनके प्रकारों का विश्लेषण करके हम यह निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि अधिगम वक्र चार तरह के होते हैं किसी वक्र में सीखने की गति द्रुतगति होती है तो किसी में अधिक। प्रत्येक व्यक्ति की अधिगम की गति एक समान नहीं होती प्रत्येक की गति अलग - अलग पाई जाती है कोई कोई व्यक्ति जल्दी सीखता है तो कोई देरी से। अधिगम वक्र से हमें सीखने की गति का पता चलता है। अधिगम वक्र को ग्राफ पेपर पर अंकित किया जाता है। अधिगम वक्र के द्वारा हमें व्यक्ति की अधिगम या सीखने की गति का पता चलता है। प्रत्येक व्यक्ति की सीखने की गति की दर अलग - अलग होती है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Ans(5) अधिगम स्थानांतरण -

सामान्य तौर पर स्थानांतरण का अर्थ होता है किसी भी वस्तु का एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना।

अधिगम स्थानांतरण का अर्थ होता है किसी भी ज्ञान, कौशल का एक विषय से सीखने के बाद उसी ज्ञान अथवा कौशल का दूसरे स्थान या क्षेत्र में प्रयोग में लाना ही अधिगम का स्थानांतरण कहलाता है।

अधिगम का स्थानांतरण होना बहुत ही आवश्यक है अधिगम स्थानांतरण होने से हम किसी भी विषय को अच्छी तरह से समझ पाते हैं। शिक्षक का महत्वपूर्ण योगदान होता है उस अधिगम को स्थानांतरण में। उन्हें बच्चों को ऐसी शिक्षा, ज्ञान और कौशल देना चाहिए जिससे अधिगम का स्थानांतरण हो सके और उन्हें किसी भी तरह की कठिनाई ना हो।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

अधिगम स्थानांतरण के प्रकारों को हम निम्नलिखित रूपों में देख सकते हैं।

अधिगम स्थानांतरण के प्रकार

→ (1) धनात्मक स्थानांतरण

→ (2) ऋणात्मक स्थानांतरण

→ (3) शून्य स्थानांतरण

→ (4) पार्श्व स्थानांतरण

→ (5) क्रमिक स्थानांतरण

→ (6) क्षैतिज स्थानांतरण

→ (7) लंबवत स्थानांतरण

→ (8) एक-पक्षीय स्थानांतरण

→ (9) द्वि-पक्षीय स्थानांतरण

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(1) धनात्मक स्थानांतरण — धनात्मक स्थानांतरण का अर्थ है कि किसी एक क्षेत्र में सीखे गए ज्ञान अथवा कौशल का दूसरे क्षेत्र में सीखे गए ज्ञान अथवा कौशल में प्रयोग लाभ हो अधिगम का धनात्मक स्थानांतरण कहलाता है।

(2) नकारात्मक स्थानांतरण — नकारात्मक स्थानांतरण का अर्थ है कि किसी एक क्षेत्र या स्तर में सीखे गए ज्ञान अथवा कौशल का दूसरे क्षेत्र या स्तर में प्रयोग में नहीं लाना हो अधिगम का नकारात्मक स्थानांतरण कहलाता है।

(3) शून्य स्थानांतरण — शून्य स्थानांतरण का तात्पर्य यह कि किसी क्षेत्र में सीखे गए ज्ञान अथवा कौशल का दूसरे क्षेत्र के ज्ञान अथवा कौशल में स्थानांतरण नहीं होना, शून्य स्थानांतरण कहलाता है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(4.) पार्श्व स्थानांतरण – पार्श्व स्थानांतरण का अर्थ है कि यदि बच्चा जोड़ या घटाव सिखता है तो उसे नवीन ज्ञान प्राप्त होता है और यदि हम उससे पूछते हैं कि 17 गोलियों में से 7 गोलियाँ निकाल दें और 17 - 7 = 10 लिखते हैं तो वह समझ जाता है अर्थात नवीन ज्ञान को पूर्व ज्ञान से जोड़ता है।

(5.) क्रमिक स्थानांतरण – क्रमिक स्थानांतरण के अंतर्गत बालक किसी भी कार्य को या विषय को पढ़ते समय या किसी भी समस्या को हल करते समय पहले के कौशल या ज्ञान को याद करता है तो उस अधिगम को अधिगम का क्रमिक स्थानांतरण कहेंगे।

(7.) क्षैतिज स्थानांतरण – अधिगम का क्षैतिज स्थानांतरण का अर्थ होता है कि हम किसी एक ही क्षेत्र या स्तर के कक्षा में सीखे गए ज्ञान अथवा कौशल का

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रयोग उसी स्तर के कक्षा के किसी दूसरे विषय में उसी ज्ञान एवं कौशलों का उपयोग करना अधिगम का क्षैतिज स्थानांतरण कहलाता है।

जैसे कक्षा 9 में गणित के नियमों का प्रयोग उसी कक्षा 9 में भौतिक विज्ञान के विषय में भी प्रयोग किया जाता है।

(3) लंबवत स्थानांतरण — लंबवत स्थानांतरण का अर्थ है कि किसी भी सीखे गए ज्ञान अथवा कौशलों को प्रयोग निम्न स्तर से उच्च स्तर के कक्षा में प्रयोग करना, अधिगम का लंबवत स्थानांतरण कहलाता है। जैसे कक्षा 4, 5 में व्याकरण का ज्ञान कक्षा 9, 10 में होता है।

(4) एक-पक्षीय स्थानांतरण — अधिगम का एक पक्षीय स्थानांतरण का अर्थ है कि यदि हम शरीर के किसी भी एक अंग के द्वारा कोई कार्य करते है तो हम उसी अंग के द्वारा कोई दूसरा

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कार्य में बड़ी आसानी से कर सकते हैं हमें किसी भी तरह की कठिनाई नहीं होती है एक पक्षीय स्थानांतरण में।

जैसे :- यदि बच्चे लिखने का काम करते हैं, हाथ से हम बच्चे हाथ से सिलाई का काम या अन्य काम भी कर सकते हैं।

(9) द्वि - पार्श्वीय स्थानांतरण - हमें ज्ञात है कि मानव के शरीर को दो भागों में बाँटा जा सकता है - बाँया और दाँया। मनोविज्ञान के छात्र होने के नाते हम यह ज्ञात होना चाहिए कि मानव मस्तिष्क के भी दो भाग होते हैं।

द्वि-पार्श्वीय स्थानांतरण में यदि हम किसी भी कार्य को बाँया हाथ से करते हैं तो उसका प्रभाव दाहिना हाथ पर भी पड़ता है। यदि हम दाहिना हाथ से लिखते हैं तो उसका प्रभाव बाँया हाथ पर भी पड़ता है, अर्थात अभ्यास के द्वारा हम बाँया हाथ से भी

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

लिख सकते हैं।

निष्कर्ष – अधिगम स्थानांतरण और इसके प्रकारों का अध्ययन करने के बाद हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि अधिगम का स्थानांतरण बहुत ही महत्वपूर्ण है और अधिगम स्थानांतरण का अर्थ एक क्षेत्र में सीखे गए ज्ञान, समझ, कौशल का उपयोग दूसरे क्षेत्र के लिए या कौशलों के लिए कर सकते हैं। बालकों में अधिगम का स्थानांतरण करने के सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षकों की होती है क्योंकि वे अच्छी तरह से बच्चों को समझा सकती हैं और शिक्षण विधियों का भी प्रयोग कर सकती हैं। अधिगम का स्थानांतरण बालक में जितना अधिक होगा वह उतना ही अच्छी किसी भी कार्य या विषय को समझ सकेगा या उसमें सफलता प्राप्त कर पाएगा।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

स्मरण करने की विधि –

परिचय – स्मृति एक मानसिक प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अचेतन मन में स्थित बातों को चेतन मन में लाते हैं। हमारे दैनिक जीवन में बहुत सी घटनाएँ घटित होती हैं। हम किसी वस्तु या स्थान को देखते हैं और उससे कुछ अनुभव प्राप्त करते हैं जो सदा हमारे चेतन मन में विद्यमान नहीं रहते हैं। जो कि अचेतन मन में अंकित हो जाते हैं स्मृति चिह्नों के रूपों में। आवश्यकता पड़ने पर इन्हीं अचेतन मन से चेतन मन में आने की क्रिया को स्मरण कहते हैं।

ब्रडवर्थ के अनुसार – सिखी गई बातों का सीधा आयोग स्मरण करना है।

स्काउट के अनुसार – स्मरण करना एक आदर्श पुनरावृत्ति है।

हिलगार्ड के अनुसार – सीखे गई, ज्ञान, कौशल एवं आदतों का पुनः स्मरण करना

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

स्मरण करने की विभिन्न प्रकार की विधियाँ होती है —

1. निरीक्षण करके
2. पूर्ण विधि
3. खण्ड विधि
4. विराम विधि
5. अविराम विधि
6. सक्रिय विधि
7. निष्क्रिय विधि
8. रटत विधि
9. मनोवैज्ञानिकों के द्वारा
10. परिदर्शन विधि
11. परियोजना विधि
12. कहानी विधि
13. गायन विधि
14. अभिनय विधि
15. तार्किक विधि
16. विचार गोष्ठी विधि

स्मरण करने की विधि में हम तार्किक विधि को सर्वोत्तम समझते हैं क्योंकि तार्किक विधि के अंतर्गत बालक किसी भी विषय के बारे में सोच, समझकर उसके बारे में गहन अध्ययन करता है उसके बारे में चिंतन करता है तब उसे अधिक दिनों तक याद रख पाता है इसलिए तार्किक विधि सबसे सर्वोत्तम विधि है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ADDITIONAL SHEET

Name of student: विद्यार्थी का नाम NUTAN TOPPO

Class Roll No: कक्षा वर्ग क्रमांक 41

Session / सत्र 2018-20

Subject: विषय Learning and Teaching

Paper: पत्र C3

Script / लिपि देवनागरी

Date: तिथि 4/1/2019

Period / घाली प्रथम पाली

Invigilator's Signature 07/01/2019

मानसिक विधियों के द्वारा स्मरण करने वाली बातें उन्हें कभी भी याद रहती हैं तो उन्हें जल्दी नहीं भूलते हैं।

अच्छी स्मृति की विशेषताएँ -

प्रस्तावना: प्रत्येक मनुष्य में स्मरण करने की शक्ति अलग - अलग पाई जाती है। किसी की स्मृति बहुत अच्छी होती है तो किसी की स्मृति अच्छी नहीं होती है कोई व्यक्ति किसी भी चीज को कभी नहीं भूलता है तो कोई व्यक्ति को कुछ बातें याद नहीं होती हैं और वह उसे ही भूल जाता है। स्मृति की अपनी - अपनी विशेषताएँ होती हैं लेकिन अच्छी स्मृति की विशेषताएँ मुख्यतः चार तरह की होती हैं।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

अच्छी स्मृति की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं —

अच्छी स्मृति की विशेषताएँ
- (1) शीघ्र सीखना
- (2) उत्तम धारण
- (3) शीघ्र पुनः स्मरण
- (4) शीघ्र पहचान
- (5) अनावश्यक बातों का विस्मरण
- (6) उपयोगिता

(1) शीघ्र सीखना — अच्छी स्मृति की पहली विशेषता शीघ्र सीखना है। इसमें बालक किसी भी विषय को शीघ्र सीख लेता है।

(2) उत्तम धारण — अच्छी स्मृति की दूसरी विशेषता, उत्तम धारण है। उत्तम धारण के अंतर्गत बालक जब किसी भी पाठ को एक बार पढ़

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

लेता है और बिना दोहराए उसे बहुत दिनों तक वह याद रहती है तो उसे उत्तम धारण कहते हैं।

(3) शीघ्र पुनः स्मरण – शीघ्र पुनः स्मरण अच्छी स्मृति की तीसरी विशेषता है इसके अंतर्गत जब हम किसी भी समस्या को हल करते हैं और हमें तुरंत उसका तरीका मालूम हो जाता है या हम पुनः शीघ्र याद कर लेते हैं तो उसे शीघ्र पुनः स्मरण कहते हैं। जैसे: परीक्षा के समय किसी प्रश्न का तरीका शीघ्र पुनः याद आ जाना।

(4) शीघ्र पहचान – शीघ्र पहचान अच्छी स्मृति की चौथी विशेषता है जिसके अंतर्गत हम सही समय पर सही तरीके को पहचान हो जाए। जैसे परीक्षा के समय तरीके का शीघ्र स्मरण होना आवश्यक है लेकिन स्मरण के साथ उसकी शीघ्र पहचान होना भी बहुत जरूरी होता है। यदि हमें सही समय में सही तरीके का पहचान हो जाता है तब वह अच्छी स्मृति कहलाएगी।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(5) अनावश्यक बातों का विस्मरण —

अनावश्यक बातों का विस्मरण अच्छी स्मृति की पाँचवीं विशेषता है। इसके अंतर्गत हमें अनावश्यक बातों को याद नहीं करना चाहिए। जो हमारे लिए आवश्यक है उन्हीं बातों को स्मरण करना ही अच्छी स्मृति की विशेषता है।

जैसे :- किसी वकील के द्वारा प्रत्येक केस के बारे कुछ न कुछ सीखना। वकील अपने केस से कुछ न कुछ सीखता है वह अनावश्यक बातों को छोड़ देता है और आवश्यक बातों को याद रखता है।

(6) उपयोगिता — उपयोगिता अच्छी स्मृति की अंतिम विशेषता है। इसके अंतर्गत हमें उपयोगी बातों को याद रखने चाहिए और जो उपयोगी नहीं है उसे भूल जाते हैं। उपयोगी बातें हमें स्मृति करने में बहुत आवश्यक होती है।

निष्कर्ष — स्मरण करने की विधियों और स्मरण करने की विशेषताओं का अध्ययन करने के बाद हम इस

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ADDITIONAL SHEET

Name of Student विद्यार्थी का नाम NUTAN TOPPO

Roll No. कक्षा का क्रमांक 41 Session सत्र 2018-20

Subject विषय Learning and Teaching

Paper पत्र C3

Date दिनांक 7/1/2019

Script लिपि देवनागरी

Period पाली प्रथम पाली

Invigilator's Signature 07/01/2019

निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि स्मरण करने की विधियां बहुत तरह की होती हैं प्रत्येक व्यक्ति की स्मरण करने का तरीका अलग - अलग होता है कोई व्यक्ति विराम विधि से स्मरण करता है तो कोई व्यक्ति अविराम विधि के द्वारा स्मरण करता है। सभी की स्मरण शक्ति अलग - अलग होती है जिसके कारण स्मरण करने की विधियां भी अलग - अलग होती हैं। स्मरण का हमारे हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है स्मरण यदि अच्छी होगी तो हमारी बौद्धिक क्षमता भी अधिक होगी और हम उच्च स्तर के ज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Ans (2) अधिगम में प्रेरणा का स्थान —

परिचय- अभिप्रेरणा या प्रेरणा का अर्थ होता है किसी भी क्रिया या कार्य को नई दिशा प्रदान करना। अभिप्रेरणा शब्द 'Motivation' का हिन्दी रूपांतरण है। Motivation शब्द लैटिन भाषा के मोटिवस शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है [illegible] सरकाना। लेकिन इसका मनोवैज्ञानिक अर्थ और शाब्दिक [illegible] अंतर पाया जाता है [illegible] अर्थ है किसी [illegible] को करने में [illegible] प्रदान करना। किसी कार्य [illegible] के लिए उत्तेजित [illegible] अभिप्रेरणा कहलाता है। [illegible] हमारे कार्य [illegible] एक दिशा प्रदान करती है। अभिप्रेरणा के लिए उत्तेजना [illegible] होता है। उत्तेजना [illegible] ही अभिप्रेरणा [illegible] है और हम किसी [illegible] कार्य को करने या लक्ष्य [illegible] के लिए उत्तेजित हो जाते हैं।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

अधिगम में अभिप्रेरणा के महत्वपूर्ण स्थान होता है। अभिप्रेरणा के कारण बच्चों के अंदर रुचि, रुझान, विषय के प्रति लगन इच्छा, आकांक्षा का स्तर का विकास होता है। अभिप्रेरित करने से बच्चों में इच्छा जाग्रित होती है अपने विषयों के प्रति और अपने पढ़ाई के प्रति इस तरह से हम कह सकते हैं कि अधिगम में प्रेरणा या अभिप्रेरणा का महत्वपूर्ण स्थान है। यदि अधिगम में बच्चों को प्रेरित किया जाता है या अभिप्रेरित किया जाता है तो बच्चे उसे या विषय को बहुत जल्दी सीख लेते हैं। और उनमें पढ़ाई के प्रति रुचि उत्पन्न हो जाती है। कक्षा शिक्षण में बच्चों को अभिप्रेरित करने के बहुत से उपाय होते हैं जो शिक्षकों के लिए आवश्यक होती है अर्थात शिक्षकों को बच्चों को अभिप्रेरित करना चाहिए।

19

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

कक्षा शिक्षण में हम बच्चों को निम्नलिखित रूप से अभिप्रेरित करेंगे —

→ (1) प्रतियोगिता के द्वारा
→ (2) ईनाम एवं पुरस्कार द्वारा
→ (3) मूल्यांकन एवं सफलीकरण
→ (4) प्रशंसा करके
→ (5) सहयोग प्रतियोगिता के द्वारा
→ (6) प्रतियोगिता की भावना का विकास का विकास करके
→ (7) रुचि उत्पन्न
→ (8) प्रोत्साहित करके

अभिप्रेरित करने के उपाय

(1) प्रतियोगिता के द्वारा — बच्चों को अभिप्रेरित करने के लिए प्रतियोगिता का आयोजन करेंगे और उनमें पढ़ाई के प्रति इच्छा को जाग्रत करेंगे।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ADDITIONAL SHEET

NUTAN TOPIC

11

Learning and Teaching

2018-20

देवनागरी

प्रथम पाली

(3) ईनाम एवं पुरस्कार द्वारा — बच्चों को अभिप्रेरित करने के लिए उन्हें ईनाम एवं पुरस्कार दिया जाएगा जिसके कारण वे और अधिक अच्छा करने की कोशिश करेंगे।

(5) पुनर्बलन या सबलीकरण — बच्चों को अभिप्रेरित करने के लिए पुनर्बलन और सबलीकरण का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अन्तर्गत बच्चों को प्रोत्साहित करेंगे और अधिक अच्छा करने के लिए। ~~उन्हें~~ अनेकानेक भी सीधा या निंदा नहीं करेंगे।

(4) प्रशंसा करके — बच्चों को अभिप्रेरित उनकी प्रशंसा करके भी कर सकते हैं। उनके जवाब देने पर हमें उसे डाँटना नहीं चाहिए बल्कि उनको प्रोत्साहित करना चाहिए जिससे कि वो और आगे अच्छा करे।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(5) स्वस्थ प्रतियोगिता - स्वस्थ प्रतियोगिता का आयोजन करके भी बच्चों को प्रेरित किया जा सकता है।

(6) प्रतियोगिता की भावना का विकास - बच्चों के अंदर प्रतियोगिता की भावना का विकास करके भी उन्हें अभिप्रेरित कर सकते हैं।

(7) रुचि उत्पन्न - किसी भी विषय के प्रति बालक का रुचि उत्पन्न करा के भी बच्चों को अभिप्रेरित किया जा सकता है।

निष्कर्ष - अधिगम में प्रेरणा का स्थान बहुत महत्वपूर्ण होता है। अभिप्रेरणा का अर्थ ही होता है कि किसी कार्य को दिशा प्रदान करना या किसी कार्य को करने में उत्तेजना का उत्पन्न होना। प्रेरणा के लिए उत्तेजना बहुत आवश्यक होती है। बच्चों को जिन्हें प्रेरित किया जाएगा वो उतनी ही मन लगाकर ध्यान से अपने कार्यों में या विषयों में ध्यान देंगे।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Ans 6.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

क्योंकि उसे घूमू चलने का अनुभव प्राप्त कर चुका है। इस प्रकार बालक ने अनुभव के द्वारा अधिगम या सीखा।

अनेक मनोवैज्ञानिकों ने अधिगम को परिभाषित किया है—

वुडवर्थ के अनुसार— तीन ज्ञान एवं तीन प्रतिक्रियाओं को प्राप्ति ही अधिगम कहलाता है।

क्रो एंड क्रो के अनुसार— आदत, ज्ञान और कौशल के अनुभव को अधिगम कहते हैं।

स्किनर के अनुसार— अनुकूलन सामंजस्य ही अधिगम कहलाता है।

अधिगम के विभिन्न कारकों का वर्णन—

अधिगम एक मनोशारीरिक प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत व्यक्ति कुछ नया कुछ सीखता रहता है। व्यवहार में परिवर्तन को ही अधिगम कह सकते हैं। हम अपने दैनिक जीवन में कुछ अधिगम प्राप्त करते हैं किसी वस्तु द्वारा स्थान के द्वारा हम कुछ सीखते हैं।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ADDITIONAL SHEET

Name of student विद्यार्थी का नाम MUFAI TOPNO

Class Roll No. कक्षा का क्रमांक 41

Session / सत्र 2018-20

Subject विषय Learning and Teaching

Paper पत्र C3

Date तारीख 7/1/2019

Script / लिपि देवनागरी

Period / पाली प्रथम पाली

Invigilator's Signature

अधिगम के कारक

→ (1) शारीरिक क्षमता

→ (2) मानसिक क्षमता

→ (3) बौद्धिक क्षमता

→ (4) स्वास्थ्य

→ (5) वातावरण का ज्ञान

→ (6) सीखने की इच्छा

→ (7) आकांक्षा स्तर

→ (8) उद्देश्यपूर्ण है।

→ (9) अनुभवों का संगठन है।

→ (10) आवश्यकता है।

→ (11) विवेक पूर्ण है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(1) शारीरिक क्षमता - ~~अधिगम~~ शारीरिक क्षमता अधिगम का प्रमुख कारक है। बालक का शारीरिक क्षमता जितना अच्छा होगा वह अधिगम उतना ही उत्तम अच्छा से कर पायेगा।

(2) मानसिक क्षमता - मानसिक क्षमता भी अधिगम का कारक है क्योंकि मानसिक क्षमता बालकों के अधिगम में महत्वपूर्ण स्थान रखता है। बालक की चिंतन शक्ति अच्छी होगी तो वह अधिगम भी अच्छी तरह से कर पायेगा।

(3) बौद्धिक क्षमता - बौद्धिक क्षमता भी अधिगम का महत्वपूर्ण कारक है। यदि बालक की बौद्धिक क्षमता उच्च स्तर की होगी तो उन्हें अधिगम अच्छी तरह से हो पायेगी अर्थात वे किसी भी चीज को बहुत ही जल्दी सीख सकेगा।

(4) स्वास्थ्य - स्वास्थ्य भी अधिगम का कारक है क्योंकि अच्छे स्वास्थ्य के बालक को अधिगम में कोई कठिनाई नहीं होती है। और यदि स्वास्थ्य अच्छा नहीं होगा तो किसी भी विषय को सीखने में मन नहीं लगेगा।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(5) वातावरण का ज्ञान - वातावरण का ज्ञान का अर्थ है भौतिक, सामाजिक और आर्थिक ज्ञान से अर्थात हम कह सकते हैं कि वातावरण का ज्ञान अधिगम के कारक है।

(6) आकांक्षा स्तर - आकांक्षा स्तर भी अधिगम के कारक के अंतर्गत आते हैं। बच्चे का आकांक्षा स्तर जितना अधिक होगा वह अधिगम को सीख पाएगा।

(7) सीखने की इच्छा - सीखने की इच्छा भी अधिगम के कारक है क्योंकि यदि बालक की सीखने की इच्छा नहीं होगी तो वह किसी भी विषय में अधिगम नहीं कर पाएगा।

(8) उद्देश्यपूर्ण है - अधिगम उद्देश्यपूर्ण होता है। जिसके द्वारा हम किसी भी लक्ष्य की प्राप्ति करते हैं।

(9) अनुभवों का संगठन - अधिगम अपने आप ही नहीं हो जाता है अधिगम के लिए हमें अनुभवों का संगठन करना होता है।

(10) आवश्यकताएँ - अधिगम एक आवश्यकता भी है। अधिगम की आवश्यकता जीवन के क्षेत्र में आगे बढ़ने में किया जाता है जैसे- शिक्षा के क्षेत्र में।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष – अधिगम (सीखने) का अर्थ और इसके कारकों का वर्णन करने के बाद हम यह निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि अधिगम हमारे दैनिक जीवन में किसी न किसी रूप में होता है और हम कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। व्यक्ति के जन्म के पश्चात् ही सीखना प्रारंभ कर देता है और वह प्रक्रिया जीवन पर्यंत चलती रहती है। अर्थात् अधिगम एक जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है जो निरंतर चलती रहती है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi College of Education
Abode of education

Name of Examination B.Ed 1st year

Manju Kumari

41 2019-21

Contemporary India & Education.

C-2 देवनागरी

Invigilator's Signature

Q1

उत्तर ⇒ → आंतरिक शक्तियों का विकास

→ शाब्दिक → भारतीय (शिक्षा एवं शास्त्र)
→ पश्चात्य Education [E, Dewo

शिक्षा → → सीमित → स्कूलिंग (औपचारिक

→ व्यापक → औपचारिक + अनौपचारिक

→ दार्शनिक → भारतीय → [V विवेकानंद, S शंकराचार्य
→ पश्चात्य → अरस्तु

→ निष्कर्ष → ज्ञान का प्रयोग

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शिक्षा –

शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य जब पैदा होता है तो वह एक जैविक प्राणी के रूप में होता है समाज के साथ सम्पर्क में आते ही वह सामाजिक प्राणी का रूप ले लेता है। इसी के बहत व्यक्ति अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। इसमें शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षा को आंतरिक शक्तियों का विकास दृष्टि कोण से देख सकते हैं।

1) शाब्दिक दृष्टिकोण से शिक्षा का अर्थ –

इसमें शिक्षा को दो भागों में बाँट सकते हैं (A) भारतीय दृष्टिकोण
(B) पाश्चात्य "

भारतीय दृष्टिकोण के आधार पर शब्द संस्कृति के विद्या धातु से बना है। जिसका अर्थ सिखना और सीखाना।

दूसरी ओर पाश्चात्य दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा अंग्रेजी

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शब्द education का हिंदी रूपांतरण है। यह education शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। E और Duco E का अर्थ अन्दर से तथा Duco का अर्थ आगे बढ़ना। इस प्रकार education का आशय है बालक का संपूर्ण विकास करना।

2) सीमित दृष्टिकोण से —

शिक्षा का आशय विद्यालयी शिक्षा से है। जिसे औपचारिक शिक्षा भी कह सकते हैं अर्थात वैसी शिक्षा जो हम विद्यालयों में जाकर प्रत्यक्ष रूप से सीखते हैं।

व्यापक दृष्टिकोण के अनुसार शिक्षा का आशय औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार के शिक्षा से है।

3) व्यापक दृष्टिकोण से —

शिक्षा का आशय औपचारिक एवं अनौपचारिक दोनों प्रकार के शिक्षा से है। अनौपचारिक का आशय है — विद्यालयी शिक्षा के पश्चात प्राप्त किये जाने वाले अनुभव से है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

परिभाषा —

a) भारतीय दार्शनिकों के अनुसार —

शंकराचार्य के अनुसार —
"आत्मसाक्षात्कार ही शिक्षा है।"

विवेकानंद के अनुसार —
"मनुष्य की अन्तर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करना ही शिक्षा है।"

पश्चात्य दार्शनिक —

अरस्तु — "शरीर में स्वास्थ्य मस्तिष्क का विकास ही शिक्षा है।"

फ्रोबेल के अनुसार — "शिक्षा एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा बालक अपनी जन्म जात शक्तियों को अभिव्यक्ति करता है।"

निष्कर्ष — उपरोक्त के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शिक्षा गतिशील प्रक्रिया है,

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

जो अजीवन चलती रहती है। यह द्विमुखी प्रक्रिया के साथ-साथ त्रिमुखी भी है।

द्विमुखी — S — T
त्रिमुखी — S — T
E

शिक्षा के उद्देश्य

शिक्षा के उद्देश्यों को तीन भागों में बाँटा गया है।

शिक्षा के उद्देश्य →

(a) व्यक्तिगत उद्देश्य →
1) शारीरिक विकास
2) बौद्धिक विकास
3) चारित्रिक "
4) अध्यात्मिक "
5) सांस्कृतिक "
6) अच्छी रुचियों और आदतों का विकास
7) आर्थिक विकास
8) चिन्तन शक्ति का विकास
9) नागरिकता की भावना का विकास
10) वातावरण के साथ समायोजन

(b) सामाजिक उद्देश्य →
1) सामाजिक दृष्टिकोण का विकास
2) सामाजिक दायित्व की भावना का विकास

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(b) 3) सामाजिक बुराइयों का अंत

4) लोक शिक्षा का प्रचार-प्रसार

5) सामाजिक एकता की भावना का विकास

6) समाजवादी समाज की स्थापना

(c) राष्ट्रीय उद्देश्य → 1) राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास

2) अन्तराष्ट्रीय भाई-चारा का विकास

3) उत्पादन शक्ति एवं आर्थिक कुशलता का विकास

4) गरीबी बेरोजगारी का उन्मूलन

5) आधुनिकीकरण की प्रक्रिया का विकास।

(d) व्यक्तिगत उद्देश्य —

शिक्षा के केन्द्र के रूप में बालक को मानने पर शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावित होती बालक का सर्वांगिन विकास होता है।

1) शारीरिक विकास — शिक्षा के माध्यम से बालक का

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शारीरिक विकास करने में मदद मिलती है।

2) बौद्धिक क्षमता का विकास — शिक्षा का उद्देश्य बालक को विस्तृत ज्ञान प्रदान करना है। ज्ञान ही एक ऐसा हथियार है। जिसे व्यक्ति को समाज में प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

3) चारित्रिक विकास — शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के चरित्र का विकास करना है। व्यक्ति के जीवन में चरित्र का होना अत्यंत आवश्यक है।

4) अध्यात्मिक विकास — शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य के अध्यात्मिक जगत का विकास करना है। अलग-अलग धर्मों का विकास करना है।

5) सांस्कृतिक विकास — शिक्षा का उद्देश्य बालक का सांस्कृतिक विकास करना है। शिक्षा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी कि हस्तांतरण की जाती है। साथ ही परिवार, समाज और राष्ट्र का विकास हो।

6) आर्थिक विकास — शिक्षा के उद्देश्य मनुष्य का आर्थिक विकास करना है। ताकि मनुष्य को

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

अपने अस्तित्व की रक्षा करनी है। बालक का शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो सभी उद्देश्यों को पूर्ति कर सकें।

7) अच्छी रुचि एवं आदतों का विकास।

शिक्षा का उद्देश्य अच्छी रुचियों एवं आदतों का विकास होना चाहिए। तो शिक्षा हमारे मदद करें।

8) चिंतन शक्ति का विकास—

शिक्षा के माध्यम से मनुष्य के चिन्तन शक्ति का विकास होता है। व्यक्ति में सोचने समझने में कुशलता फिर विकसित हो सके।

9) नागरिकता की भी भावना का विकास—

भारत में शिक्षा के उद्देश्य नागरिकता के भावना का विकास करना है। नागरिकता की भावना हमें कर्तव्यों के प्रति जागरूक करती है।

10 वातावरण का विकास—

शिक्षा हमें वातावरण के साथ समायोजन दिखाने में हमारा सहयोग करती है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

b) सामाजिक उद्देश्य

1) सामाजिक दृष्टिकोण का विकास — मनुष्य एक सामाजिक प्राणि है। सामाजिक प्राणी होने के नाते व्यक्ति सामाजिक दृष्टिकोण का विकास करता है। मनुष्य समाज में जन्म लेती है। अतः समाज का विकास करती है।

2) सामाजिक उत्तरदायित्वों की भावना की विकास — व्यक्ति समाज का सदस्य होने के नाते इसके कई कर्तव्यों एवं उत्तरदायित्वों होते है जिसे उन्हे निभाना पड़ता है।

3) सामाजिक बुराईयों का अंत — समाज में अनेक बुराइयाँ पाई जाती है जैसे दहेज प्रथा, डाइन खेला विवाह, देहेज प्रथा आदि एक शिक्षित व्यक्ति होने के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति का एक कर्तव्य होता है कि इसले निजात दिलाए।

4) लोक शिक्षा — समाज के अनेक दायित्व होते है उसे उनदायित्व मे एक है जन शिक्षा।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

का प्रयास जिससे व्यक्ति जागरूक होता है।

c) राष्ट्रीय शिक्षा उद्देश्य-

1) राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास — भारतीय संविधान की प्रस्तावना राष्ट्रीय की एकता और अखण्डता की बात करता है। राष्ट्र स्तर पर एकता स्थापित करने लिए सरकार अनेकानेक प्रयास करती है।

2) अंतराष्ट्रीय भाईचारा का विकास

विश्व बंधुत्व के भावना के विकास के लिए एक देश दूसरे देशों के बीच मेल मिलाप भाई-चारा आदि की स्थापना के लिए हर सम्भव प्रयास करते है।

3) उत्पादन शक्ति का विकास —

भारत एक सम्प्रभुत देश है यह उत्पादन एवं आर्थिक उन्नति के लिए अपने निर्भर है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

4) गरीबी बेरोजगारी — एक शिक्षित व्यक्ति शिक्षा का उद्देश्य गरीबी बेरोजगारी को दूर करना है।

5) आधुनिकीकरण विकास — शिक्षा का उद्देश्य आधुनिकरण की प्रक्रिया को बढ़ावा देता है। आधुनिकता का आशय है शिक्षा में वर्तमान में हो रहे वर्तमान से अवगत कर रहना तथा यदि शिक्षा के साथ-2 सामंजस्य में सहयोग हो।

निष्कर्ष — उपर्युक्त आधार पर हम कह सकते है कि शिक्षा का उद्देश्य व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक अध्यात्मिक, सांस्कृतिक, मनोवैज्ञानिक नैतिक विकास करना है जिससे कुशल नागरिक बन सके। तथा राष्ट्र के विकास में अपनी भूमिका निभा सके।

(12)

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Q2.

Ans ⇒ शिक्षा के कार्य —

वैसे तो शिक्षा के अनेकों कार्य है जिसमें कुछ को हम यहाँ देख सकते है। इसे सुविधा की दृष्टि से दो भागों में बाँटा जा सकता है।

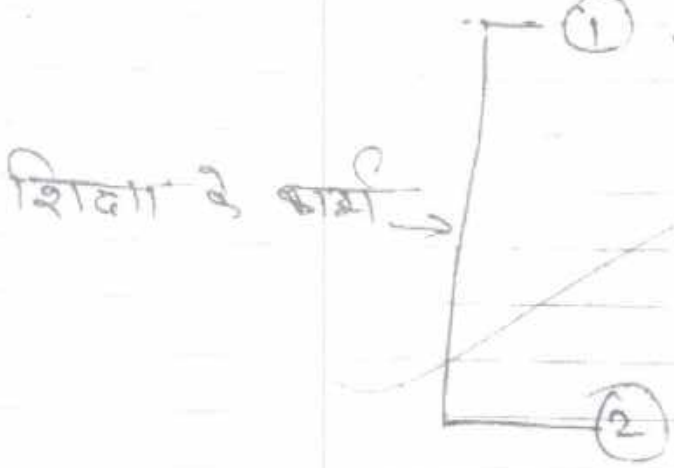

① सामान्य कार्य

a) अच्छा नागरिकता का विकास —

व्यक्ति में नागरिकता की भावना का विकास शिक्षा के माध्यम से किया जाता लोकतांत्रिक देश होने के है। भारत एक नाते यही नागरिकों से यह अपेक्षा होती है कि वह अपने कर्तव्य एवं उत्तरदायित्व के प्रति निष्ठापूर्वक व्यवहार करे।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

हमारे संविधान भी व्यक्ति एवं कर्तव्यों का बात करता है। माध्यमिक शिक्षा आयोग ने भी यह कहा है।

b) भावी जीवन की तैयारी—

शिक्षा का कार्य व्यक्ति के भविष्य का निर्धारण करना भी स्वामीविवेकानंद के अनुसार कुछ परीक्षाएँ पास करना ही शिक्षित होना नहीं है बल्कि व्यक्ति को भावी जीवन के संघर्ष के लिए तैयार करना भी है।

c) जन्मजात शक्ति का विकास—

शिक्षा का प्रमुख कार्य जन्मजात शक्तियों का विकास करना है बुद्धिवादी दार्शनिकों का मानना है कि बालक को जन्म के समय ही वो क्षमता छिपी विकास कर सके।

d) प्रौढ़ जीवन की तैयारी—

शिक्षा का कार्य प्रौढ़ जीवन की तैयारी करना भी है। बालक से प्रगति कर युवा ही भावी प्रौढ़ है। बालक में शिक्षा के माध्यम से ही रुचि, दायात योग्यता एवं उत्तरदायित्व की भावना

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

का विकास कर सके।

1) आत्मनिर्भरता की प्राप्ति —

शिक्षा का अर्थ व्यक्ति को आत्म निर्भर बनाना है। इस आत्मनिर्भर निर्माण लेने के लिए शिक्षा सहायक होती है क्योंकि शिक्षा एक ऐसी कला है जो व्यक्ति आत्मनिर्भर बना देता है।

2) चरित्र का निर्माण —

शिक्षा का प्रमुख कार्य चरित्र का निर्माण करना है। एक शिक्षित व्यक्ति में ही नैतिक गुण पाया जाता है।

3) समाज सुधार — एक शिक्षित व्यक्ति समाज में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा सकती है तथा समाज में पायी जाने वाली बुराई को दूर करने में प्रयास करती है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

2) विशिष्ट कार्य :

a) व्यक्ति संबंधी कार्य —

- व्यक्ति के व्यक्तित्व का विकास करना
- भावी जीवन के लिए तैयार करना
- नैतिक उत्थान करना
- व्यक्ति को आत्मनिर्भर बनाना
- शक्ति का निर्माण करना
- मानव को उसकी आधारभूत ~~विशेषता~~ के लिए सजग बनाना।

b) समाज संबंधी कार्य —

- सामाजवादी समाज की स्थापना करना
- सामाजिक समस्याओं को परिभाषित करना
- समाज को सैद्धांतिक ज्ञान कराना
- समाज में आगे आने वाली कुरीतियों को समाप्त करना
- समाज की संस्थाओं के अच्छे कार्यों में वृद्धि करना।

c) राष्ट्रीय विकास संबंधी कार्य —

- राष्ट्रीय एकता की भावना का विकास करना
- राष्ट्रीय एकता में अपना सहयोग देना।

Principal
Bharathi College of Education
Kanchi, Mandar, Ranchi

- राष्ट्रीय सुरक्षा के प्रति लोगों में इस तरह की भावना का विकास करना।
- सार्वजनिक व्यवस्था संबंधी कार्य करना।
- राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों का ज्ञान कराना।
- राष्ट्रीय संपत्ति की रक्षा करना।

4) पर्यावरण संबंधी कार्य :—

- पर्यावरण की रक्षा करना
- पर्यावरण की सुरक्षा संबंधी संतुलन को नियंत्रण करना।
- पर्यावरण के प्रति लोगों को जागरूक करना।

5) अंतर्राष्ट्रीय कार्य :—

- विश्व में शांति की स्थापना में अपना सहयोग देना।
- विश्व बंधुत्व की भावना का विकास करना।
- अन्य देशों के नागरिकों के प्रति सहृदयी व्यवहार करना।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi College of Education

an abode of education

ADDITIONAL SHEET

Name of Student विद्यार्थी का नाम Manju Kumari

Class Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 41 Session / सत्र 2019 - 21

Subject विषय

Paper पत्र C - 2 Script लिपि देवनागरी

Date तिथि Period पाली

Invigilator's Signature

निष्कर्ष — शिक्षा के कार्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि शिक्षा के कार्य दो रूपों में होता है पहला सामान्य कार्य तथा दूसरा विशिष्ट कार्य किसी सामान्य कार्य में उसका नागरिकता तथा विशिष्ट कार्यों में व्यक्ति, समाज राष्ट्र, पर्यावरण तथा वातावरण से संबंधित कार्यों को करने में सहायक होता है।

(10)

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Q.3.

उत्तर → भारतीय संविधान के नीति निर्देशक सिद्धांत —

↓

भाग IV

↓

अनुच्छेद [illegible]

↓

लोक कल्याणकारी कार्य की बात

भारतीय संविधान के भाग IV के अनुच्छेद [illegible] में DPSP का प्रावधान है।

[illegible] समिति ने DPSP का [illegible] निर्माण किया यह [illegible] संविधान से लिया गया है। DPSP [illegible] को एक निर्देश मात्र है। [illegible] इसे मानने के लिए बाध्य [illegible] इसके बौद्धिक राज्य [illegible] अपेक्षा की जाती है [illegible] अपने नीति एवं कानून के [illegible] में DPSP के तत्वों को [illegible] महत्व देती है।

DPSP भारत को एक कल्याणकारी राज्य के रूप में स्थापित करता है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

डॉ आंबेडकर के अनुसार DPSP के सिद्धांत भारतीय संविधान के आदर्श व आधार है और न्याय योग्य है। क्योंकि राज्य के द्वारा DPSP के प्रावधान को लागू न किये जाने की स्थिति में न्यायालय में लागू नहीं की जा सकती है।

DPSP के लक्षण-

- DPSP के आदर्शों को राज्य नीति एवं कानून के निर्माण के समय ध्यान होना आवश्यक है।

राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांत —

की स्थिति में न्यायालय इसे लागू नहीं करवा सकता है। सरकार को इसे लागू करने के लिए बाध्य नहीं किया जा सकता है। इसकी उल्लंघन

DPSP में राज्य के लिए व्यापक, भविष्य सामाजिक राजनीतिक कार्यक्रम सामिल है —

इसके तहत शामिल प्रावधान कल्याणकारी राज्य की स्थापना न करे कल्याणकारी राज्य की स्थापना की बात करते है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

यद्यपि DPSP और न्याय योग्य में किसी विधि कानून की संवैधानिकता के निर्धारण में न्यायालय के लिए मददगार है।

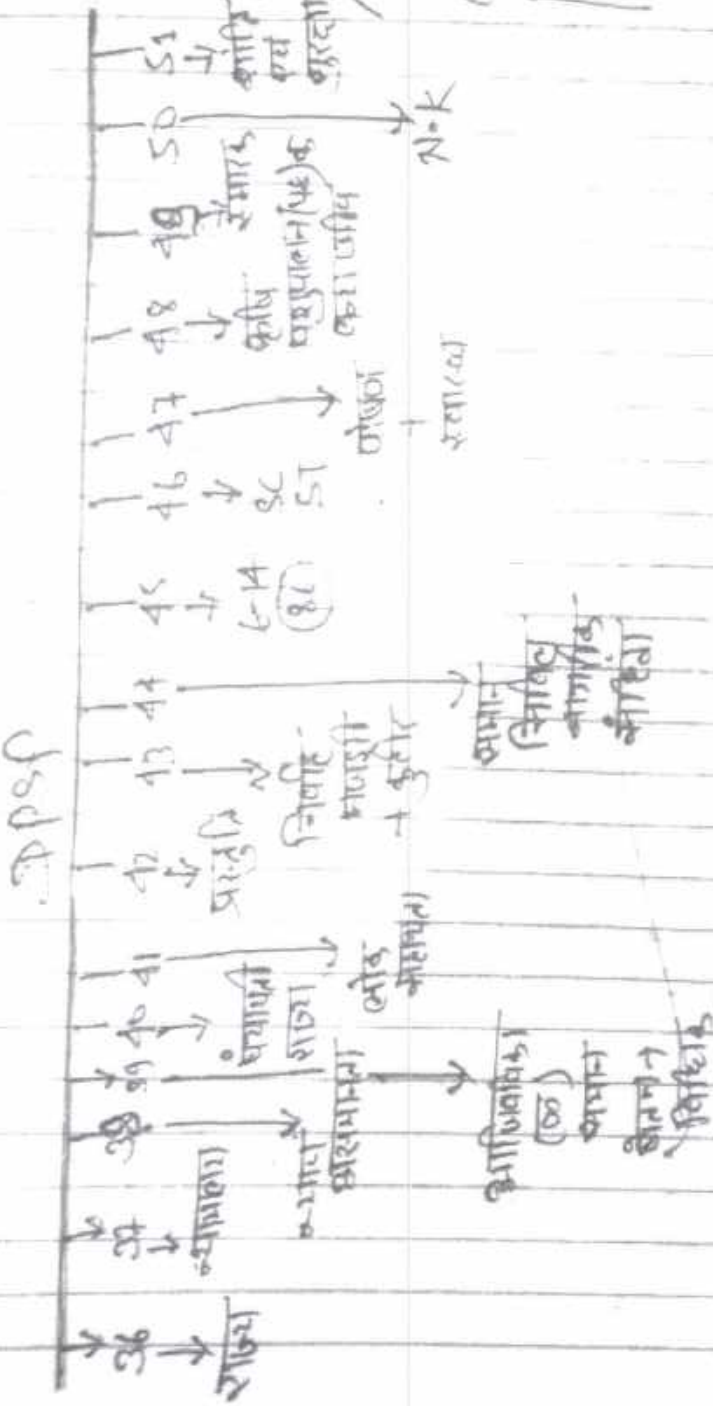
DPSP
41
42
43
44
45
46
47
48
49
50
51
न्यायपालिका से पृथक्करण
ग्राम पंचायत का संगठन
निर्वाचित महिला प्रतिनिधित्व
समान नागरिक संहिता
ग्राम पंचायत का संगठन
कृषि एवं पशुपालन (पृथक्करण)
ग्राम पंचायत का संगठन
ग्राम पंचायत का संगठन
ग्राम पंचायत का संगठन

Bharathi College of Education
an abode of education

ADDITIONAL SHEET

Name of Student विद्यार्थी का नाम Manju Kumari

Class Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 41 Session सत्र 2019-21

Subject विषय

Paper पत्र C-2 Script लिपी देवनागरी

Date तिथि Period पाली

Invigilator's Signature

DPSP के महत्व →

① मौलिक कर्तव्य नागरिकों को उनके अधिकारों के साथ-साथ देश-समाज और लोगों के प्रति उनके कर्तव्यों के लिए प्रति जागरूक बनाता है।

② यह राष्ट्र विरोधी एवं समाज विरोधी गतिविधि के विरुद्ध की एक चेतावनी है। जैसे - राष्ट्र ध्वज जलाना, सार्वजनिक संपत्ति की बर्तादी करना आदि

11

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

मौलिक कर्तव्यों को कानून द्वारा लागू किया जा सकता है।

निष्कर्ष → नागरिकों के अधिकार एवं कर्तव्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। कर्तव्य एक अधिकार का दूसरा पक्ष है। यह अधिकार का ही एक अंग है। अधिकार और कर्तव्य परस्पर आश्रित हैं। अतः नागरिक को अपने अधिकारों के साथ-साथ कर्तव्यों का भी निर्वाह करना चाहिए।

Q 60

उत्तर → शिक्षा → शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य जब पैदा होता है तो वह एक जैविक प्राणी के रूप में होता है समाज के संपर्क में आने से वह सामाजिक प्राणी का रूप ले लेता है। इसमें शिक्षा महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शिक्षा के क्षेत्र (Scope)

शिक्षा मानव या व्यक्ति का एक महत्वपूर्ण अंग है। मानव जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है शिक्षा के माध्यम से ही व्यक्ति के चरित्र का निर्माण होता है। साथ ही उनमें मानवता का भी विकास होता है।

शिक्षा के क्षेत्र (Scope)

- (1) व्यक्तिगत क्षेत्र
- (2) सामाजिक क्षेत्र
- (3) राष्ट्रीय क्षेत्र
- (4) वातावरणीय क्षेत्र

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(1) व्यक्तिगत क्षेत्र →

(a) सम्पूर्ण व्यक्ति का विकास → शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक धार्मिक, व्यावसायिक सांस्कृतिक संवेगात्मक विकास देखने को मिलता है।

(b) नैतिक विकास — समाज में नैतिकता को अधिक महत्व दिया जाता है

(c) मानवीय गुणों का विकास — शिक्षा के द्वारा प्रेम, त्याग, दया, करुणा, सहानुभूति इत्यादि गुणों का विकास होता है।

(d) आंतरिक क्षमताओं का विकास — शिक्षा के द्वारा व्यक्तियों में आंतरिक क्षमताओं का विकास होता है।

(e) भावी जीवन की तैयारी — शिक्षा व्यक्ति की भावी कार्यों का विकास कर उसकी जीवन की गुणवत्ता में उसे सक्षम बनाती है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi College of Education

an abode of education

ADDITIONAL SHEET

Name of Student विद्यार्थी का नाम Manju Kumari

Class Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 41 Session सत्र 2019-21

Subject विषय

Paper पत्र C-2 Script लिपी

Date तिथि Period पाली

Invigilator's Signature

2) शिक्षा का सामाजिक क्षेत्र

i) सामाजिक संरचना का विकास — शिक्षा समाज का एक अंग है जो किसी भी आधार पर अलग नहीं किया जा सकता है। शिक्षा ही हमें आपस में प्रेम, भाईचारा, परोपकार, दया आदि भावनाओं को विकसित करने में हमारी मदद करती है।

ii) सामाजिक नियमों का ज्ञान — प्रत्येक मनुष्य के लिए यह आवश्यक है कि वह सामाजिक नियमों की जानकारी रखे।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

3) शिक्षा के राष्ट्रीय क्षेत्र

a) कुशल नागरिक — शिक्षा ही व्यक्ति को एक कुशल नागरिक होने के लिए प्रेरित करता है।

b) राष्ट्रीय एकता — जाति, धर्म, भाषा आदि के आधार पर भेद-भाव न हो।

c) राष्ट्रीय विकास — यदि देश की नागरिक शिक्षित होंगे तो वह अपने विकास के साथ-2 समाज का विकास करेंगे।

4) वातावरणीय क्षेत्र

a) वातावरण के साथ समायोजन — मानव एक सामाजिक प्राणी है इस नाते उसे वातावरण के साथ विषम परिस्थितियों में भी सामंजस्य बैठाना होता है।

b) वातावरण में परिवर्तन — व्यक्ति सृष्टि के पहले वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करती है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शिक्षा की प्रकृति —

शिक्षा की प्रकृति को हम दो रूपों में देखते हैं —

प्रकृति

① प्रक्रिया के रूप में ② विषय के रूप में

प्रक्रिया के रूप में शिक्षा के ~~प्रकार~~ प्रकृति निम्न है —

① शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है। S – I

② शिक्षा एक त्रिमुखी प्रक्रिया है।

S – I – S

③ शिक्षा एक पंचमुखी प्रक्रिया है।

④ शिक्षा आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

5) शिक्षा एक संचालित प्रक्रिया है।

6) शिक्षा एक परिवर्तन है।

7) शिक्षा व्यक्ति को प्रशिक्षित करने की प्रक्रिया है।

8) शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है।

विषय के रूप में शिक्षा की प्रकृति

(1) शिक्षा एक कला के रूप में

(2) शिक्षा एक विज्ञान के रूप में

(3) शिक्षा कला तथा विज्ञान दोनों के रूप में।

निष्कर्ष ⇒

उपरोक्त आधार पर अगर इसकी प्रकृति पर विचार करें तो कहा जा सकता है कि शिक्षा मनुष्य के विकास की पूर्णता को अभिप्रेरित है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति के विचारों पर नियंत्रण रखा जाता है। इससे चिंतन शक्ति का विकास होता है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi College of Education
an abode of education

ADDITIONAL SHEET

विद्यार्थी का नाम Manju Kumari

कक्षा वर्ग क्रमांक 41 Session सत्र 2019-21

विषय

C-2 Script लिपी

Paper पत्र

Invigilator's Signature

Q8.

(a) मूल कर्तव्य

भारत का संविधान लागू हुआ था तब कर्तव्यों की बात नहीं किया गया था। संविधान निर्माताओं को मौलिक कर्तव्यों को शामिल करने की आवश्यकता महसूस नहीं हुई। 1976 में 42 वें संविधान संशोधन में कानून संविधान नागरिक के मौलिक कर्तव्यों को शामिल किया गया।

के लिए मौलिक कर्तव्यों संबंधित अनुसंसा 1976 में स्वर्ण समिति

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

का गठन किया गया।

42वीं संविधान संशोधन कानून के द्वारा संविधान में नया भाग IV का (का जोड़ा गया साथ ही Art 51(क) के अनुसार भारत के नागरिक के मौलिक कर्तव्य निम्न हैं —

i) संविधान का पालन राष्ट्रध्वज एवं राष्ट्रगान का सम्मान।
ii) स्वतंत्रता संग्राम के आदर्शों का पालन करना
iii) भारत की संप्रभुता एकता एवं अखण्डता का संरक्षण।

iv) देश का बचाव और आवश्यकता पड़ने पर अपनी सेवा देना

v) सौंदर्य एवं मानित्व की भावना का विकास

vi) देश की संश्लिष्ट संस्कृति की समृद्धि धरोहर का संरक्षण करना और महत्व प्रदान करना।

vii) प्रकृति पर्यावरण संरक्षण एवं विकास तथा सभी जीवों के प्रति दया भाव।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

viii) वैज्ञानिक, दृष्टिकोण मानव वाद तथा ज्ञान प्राप्ति एवं सुधार को बढ़ाना और हिंसा से दूर रहना।

x) व्यक्तिगत एवं सामूहिक गतिविधि में सर्वोत्तम प्रदर्शन करना, ताकि राष्ट्र उपलब्धियों की नई ऊँचाइयों का छू सके।

xi) 6-14 वर्ष के बच्चों शिक्षा के लिए माता-पिता के द्वारा अवसर प्रदान करना। यह मौलिक कर्तव्य 86 वाँ संविधान संशोधन 2002 के द्वारा शामिल किया गया।

मूल कर्तव्य के लक्षण — कुछ मौलिक कर्तव्य, नैतिक कर्तव्य है और कुछ नागरिक कर्तव्य है।

आलोचना — (1) इसमें अनेक कर्तव्यों जैसे वोट देना, कर देना, परिवार नियोजन आदि शामिल नहीं है।

(2) अनेक मौलिक कर्तव्य स्पष्ट है और उनकी स्पष्ट परिभाषा नहीं है।

(7)

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

निष्कर्ष — नागरिकों के अधिकार एवं कर्तव्य एक दूसरे से जुड़े हुए हैं कर्तव्य के बगैर अधिकार का कोई मूल्य नहीं है। यह अधिकार का ही एक अंग है।

Q 8

(b) जाति के आधार पर विविधता

विविधता (Diversity) — विविधता का आशय है एक दूसरे से भिन्न होना भारत एक विशाल देश है यहाँ अनेक जाती धर्म रंग रूप भौगोलिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, भाषाई एवं जनजाति आधार पर विविधता स्थिति को जानते हैं क्योंकि यहाँ अनेक धर्मों के लोग निवास करते हैं। इसलिए जाति के आधार पर भी विभिन्नता पायी जाती है।

भारत में अनेक जाति के लोग रहते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत में अनेक प्रकार की विविधता मिलती है —

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi College of Education

an abode of education

ADDITIONAL SHEET

Name of Student विद्यार्थी का नाम Manju Kumari

Class Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 41

Session सत्र 2019-21

Subject विषय

Paper पत्र C-2

Script लिपी

Date तिथि

Period पाली

Invigilator's Signature

विविधता →

1. जाति (4 जाति)
2. धर्म
3. जनजाति ✓
4. भौगोलिक
5. रंग - रूप
6. सांस्कृतिक
7. भाषायी

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

जाति के आधार पर विविधता —

भारत में अनेक प्रकार की जातियाँ निवास करती हैं। प्राचीन काल में ही वर्ण का स्थान जाति में मिल गया था। इनमें अप्रवास क्षत्रीय, वैश्य, और शूद्र को शामिल किया जाता है। ब्राह्मण का कार्य वेदों को पढ़ाना। क्षत्रिय का कार्य युद्ध से संबंधित। वैश्य का कार्य व्यापार से तथा शूद्र का कार्य तीनों वर्णों की सेवा करना था। आगे चलकर इन चारों वर्णों में भी अनेक प्रकार की उपजाति की उत्पत्ति होने लगी।

भारत में रहने वाले के विभिन्न जातियों का रहन-सहन, खान-पान, विवाह प्रणाली और उसके संस्कार में अनेक दोष एवं आकर्षण की देखने को मिलते हैं।

जाति के आधार पर कार्य करने में अवसर दिये जाते हैं।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Nawadar, Ranchi

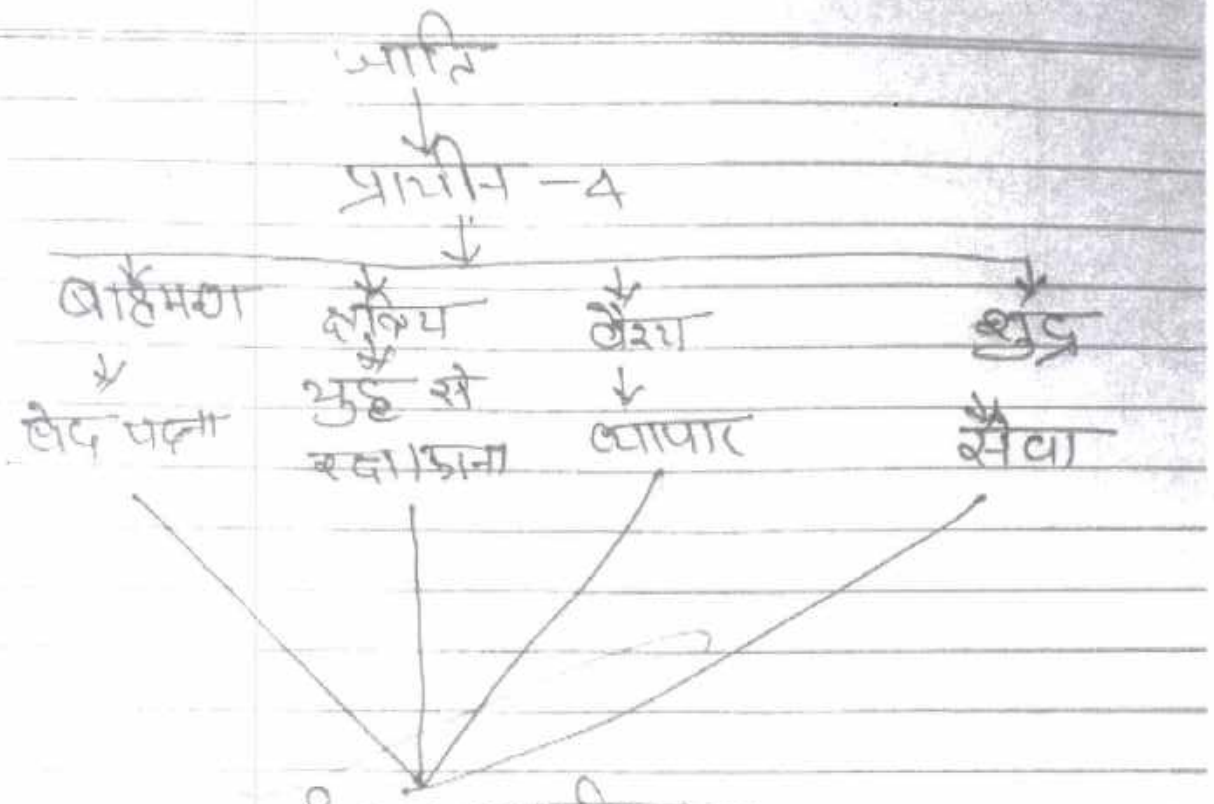

Principal
Bharathi College of Education
Kandri Mandar Ranchi

Bharathi Group of Institutions

an abode of education

College Name: Bharathi College of Education

Name of Examination: B.Ed

Preeti Uboreja

28 2020-22

Knowledge and Curriculum

8 ROMAN

Invigilator's Signature

Ans-1 [illegible] is made up of which two words

Ans → [illegible] and Sophia

(ii) whose statement is "who have a thirst for knowledge of course philosopher"

Ans → [illegible]

(iii) text book is used by

Ans → (C) Both

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(iv) How many Base are there for Curriculum Construction:-

Ans→ (d) 10

(v) what are the benefits of education in nationality:-

Ans→ (d) all of these.

(vi) Tagore got Nobel Prize in which field:-

Ans→ (b) Literature

(vii) the word curriculum originated from the latin word "Currel" which means is -

Ans→ (a) Racing track.

(viii) Which of the following is a formal agency of education:-

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Ans → b) college.

(ix) Today the nature of the curriculum is :-

Ans → (a) comprehensive

(x) who is the father of sociology :-

Ans → (d) August comte

Ans-6) → Introduction :-

The suffix of knowledge is related to Epistemology the process of acquiring knowledge is based on logical thinking, with arrival and incorporation thoughts taking precedence →

- Education is directly related to knowledge Epistemology because education imparts knowledge to children. the subject of knowledge epistemology is used in education. This helps us to make many kinds of decisions related to education. when we want to build the syllabus

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

or curriculum, we face this problem which knowledge should we include and in which order the elements of knowledge should be included and which part should not be included. All these problems can be solved by knowledge Epistemology.

Meaning :- knowledge epistemology is the branch of philosphy in which knowledge related problems are solved. knowledge Epistemology is the philosphical investigation of knowledge related problems. Under this, the origin of knowledge the meaning of knowledge, source of knowledge and the problems related to knowledge are discussed.

Knowledge Epistemology and Education.

Education is related to knowledge epistemology because education imparts knowledge to children. In this connection different systems of imparting knowledge have been mentioned in different sects of philosphy.

"Man is the test of all knowledge

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

avoid the ultimate knowledge is nothing."

- A/c to pragmatists, the value of knowledge was not in its use and a/c to realists, knowledge can be acquired only by real circumstances and substances.

- Idealism is also called knowledge Epistemology. It has affected all levels of education. Idealist give more importance to the mind. knowledge is only possible through the mind.

- Therefore, knowledge is dependent on the mind of the knower.

- It is possible to acquire knowledge through thinking, contemplation, reasoning, argumentation etc.

Main Point	Curriculum	Syllabus
Meaning	the curriculum is content & experience that is taught in an educational institute.	A syllabus is a document in which the content & portion of subject is given.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Main Point	Curriculum	Syllabus
• Origin	Curriculum is a Latin word	Syllabus is a Greek word.
• Scope	It has wider scope.	It has narrower scope.
• Nature	Perscriptive	Descriptive
• Duration	Till the course lasts	Till the 1 year last.
• Determination	Government or administration of school, colleges, institutes	Exam Board.
• Uniformity	Same for all teachers	Varies from teacher to teacher
• Effect	It effect each and every aspect of the human life.	It effects the knowledge & skills of the person in a particular subject.
• Knowledge	It includes bookish theoritical and practical knowledge	• It includes bookish & theoritical knowledge.
• Aspects	It develops all aspects of human life like mental	• It is bounded to subjects & its facts.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Main Point	Curriculum	Syllabus
	physical, economical Social etc	
• Measurable	Not Measurable	Measurable
• Set for	A course	A subject
• Given	Given only to teacher & to students if demanded	Given to both.

ans 1 Introduction

Education is a planned process of giving knowledge, development of ability and delivery of interest, attitude and values. The role of our schools is limited to the first level of the education process i.e. imparting knowledge this work is also not being done satisfactorily. The syllabus of Indian schools emphasises the knowledge of the text books. In this, less importance is given to practical activities and experiences.

Curriculum Reconstruction Efforts OR Views of Educational Commission about School

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

- Radhakrishan Commission: Just After Independence, the first commission was founded by the Dr. Radhakrishan in 1948 A.D. called University Commission. This commission gave suggestion for 3 year degree course for the improvement of higher studies.

- Mudaliar Commission: the secondary education commission has made several important suggestions to bring about comprehensive reforms in the curriculum as per the requirements of independent democratic India some of which are as follows:-

→ Establishment of multipurpose schools to meet the need of education.

→ Change in secondary level education period

→ A general course upto secondary level.

→ Curriculum at lower Secondary level:

- According to the Secondary Education commission, the purpose of the curriculum up to the middle school level is to make children aware of the wider field of human knowledge and interest in the most general manner.

Dr.
Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

- Study of languages
- Social Studies
- General Science
- Maths
- Arts and Music
- Hand art
- Physical Education.

→ Curriculum at higher secondary Level: (9-11 class)
for the curriculum is prescribed:-

- Compulsory subject:-
(a) Language [Mother language & local language]

One additional subject among these:-
- Hindi (for Non-hindi speaking state)
- Basic English (Not studied English in middle)
- Higher English (Studied in middle)
- Modern Indian Language (Except Hindi)
- Modern foreign Language (Except English)
- Cultural language.

(b) Social studies and General Science & Maths.

(c) Any one craft:- Stitching, Carpentary, Metal-work, Gardening, Spinning, Typing, Work-Experience.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

- Optional subject:- 3 subjects in a class among these :-
  - Humanities
  - Practical
  - Agriculture
  - Science
  - vocational
  - Fine Arts
  - Home science

- Kothari Commission: Curriculum prescribed by Kothari Commission are as follows:-

Class 1-4 → 3 language (Mother tongue)
→ Mathematics
→ EVS
→ Creative Activities
→ Work Experience & social service
→ Health Education

Upper Primary level :- (a) Two language -
(i) Mother Tongue or Regional
(ii) Hindi or English.

(b) Mathematics
(c) Science
(d) Art
(e) Social study, Physical Education, Moral values
(f) Work Experience & Social service.

Curriculum of lower secondary level (8-10) -

(a) Three languages -
(b) Non Hindi speaking states → Mother Tongue
- Advanced or Elementary hindi

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

- Advanced or Elementary english.

(c) Hindi-Speaking States: → • Mother Tongue or Regional language.
- English or Hindi if english has been offered as the Mother Tongue.
- Besides Hindi, one other Modern Indian Language.

(d) Study of classical language (Sanskrit, Parsi etc.)
(e) Mathematics (f) Science (g) History, Geo.
(h) Art (i) Work Experience & social service.
(j) Physical Education
(k) Education in Moral or Spiritual values.

Curriculum of Higher Secondary level (Class 11-12)

(a) Any two languages in which any modern Indian language, any modern foreign language and classical language should be included.
(b) Any three subjects from the following
- One additional language.
- History
- Geography
- Economics
- Physics
- Chemistry
- Biology.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

- Geology
- Home Science
- Logic
- Work Experience and Social Service
- Physical Education
- Art and Craft.
- Education in Moral, Spiritual Values.

Ans-5 Introduction: India is a secular country. Different types of people live here together. They are different from each other, in many aspects like caste, religion, gender, colour etc. and that's why to bring all of them in a mainstream it is very important. To make same basic rules and duties and all human beings in a same mainstream without any discrimination, inequality or marginalisation is known as Universalism or Universilization.

Meaning: The Universalization is called the socialisation, the extension of area and range of something for good.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Universalisation of Education:

- Universalisation of education means to make available education equal for everyone at elementary level so that each and every children can get atleast basic education.

- According to this, it is the duty of the state that it should provide education for 6-14 years of children and even that is free and compulsory (Article-45). And in Indian constitution, it is the Right of an Indian Citizen to get education Article 21 (A).

- For another developed countries, the meaning of universalisation in education means to provide education, books, food, transportation, utensils etc. free of cost but it is impossible for the developing country like India because, India is not so efficient as the Economy.

So we can say that, the meaning of Universalisation in education is providing free and compulsory education to the children of 6 to 14 years i.e. 1 to 7 class at Elementary level.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Need and Importance of Universalisation in Education:

- Universalisation of education is important for the overall development of the child.
- It is important for social development so that society can develop, because society can only develop with the education.
- It is important for national development because as the society develop its leads to the development of the country also.
- It helps in the character development of the children.
- It is important for the removal of social evils from the society.
- It helps in the development of the feeling of socialism and Nationalism.
- It is important for the economic development on an individual and ultimately the country.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

- It is important for the vocational development.
- It is the only way through which we can meet the needs of our country.
- It is import for spreading education for all even to adults also.
- It is import for spreading education for all even to adults also.

Universalisation with reference to Tagore & Krishnamurti:

Tagore was a great Realist. His education was based on self-knowledge. To achieve the reality of education, a universal mind is required. He emphasised love and Universalism in the field of education. He supported complete Independence of the child. A/c to his idea, the student should be mentally, physically, socially, morality well-sound so that they can achieve Universalism from any field of education.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

According to Krishnamurthy's ideas education develops child consciousness and entrepreneurship. The child should be aware of the art of learning so that he can be universally developed.

Ans-2 According to Gandhi ji -
By education mean an all round drawing out the best of child and man & body, spirit and mind."

- All round implies harmonious development and drawing out the best means the best quality of a person.
- According to Gandhi ji education should be such that it helps in the over all harmonious development of a person.
- According to Gandhi ji literacy is not education. Literacy is only the means of the education. He emphasised the development of head, heart & health.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi College of Education

an abode of education

ADDITIONAL SHEET

Name of Student विद्यार्थी का नाम Preeti Uboveja

Class Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 28 Session सत्र 2020-22

Subject विषय Knowledge and Curriculum

Paper पत्र C-8 Script लिपी ROMAN

Date तिथि Period पाली

Invigilator's Signature

Ans-2 Aims of Education:

Gandhiji divided the aims of education in two categories-

1) Immediate Aim of Education

- Vocational Aims - It is also known as self-supporting aim of education. Gandhi-ji wanted that each child should be able to learn a productive craft to meet his future needs of life and become self-supporting.
- Cultural Aims - He educated that together

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

with vocational education cultural advancement should go side by side. He considered the cultural aspect of edu as more essential.

- Character Aim: A/c to Gandhiji, the end o all knowledge should be the building of character. Character building implies cultiv of moral values such as courage, steadi of mind, righteousness, self restraint and Service of humanity.

- Perfect Development Aim:- Gandhiji once wrote, "the real educat is that which fully develops the mind, bo and soul of children." He further obser "Man is neither mere intellect, nor the gross animal body, nor heart or soul alone. A proper and harmonious combination all three is required for the making of the whole man and constitutes the true economics of education."

2) Ultimate Aim of Education:

Self-realisation and spiritual developm find perfect support in Gandhian scheme of education. Education should provide spiritual freedom. Accordi

Principal
Bharathi College of Education
Mandar, Ranchi

to Gandhiji, "Development of the Moral character, development of the whole all were directed towards the realisation of the ultimate reality, the merger of the finite being into the infinite". It is realising godliness in his self.

Curriculum :-

Gandhiji devised a scheme of education which is known as 'Basic Education', 'Nai Talim' or 'Wardha scheme of Education'. Its Curriculum is activity centered. He suggested the following subjects to be included in the curriculum.

) Basic Craft :- Gandhiji prescribed productive craft as the medium of education. A number of crafts such as agriculture, spinning and weaving, wood work, metal work, gardening, leather work have been suggested.

) Mother Tongue :- Gandhiji stressed that all elementary education must be imparted through the medium of the mother-tongue. The proper teaching of mother

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

tongue is the foundation of all education.

(iii) Arithmetic - To be correlated with the life situations, other subjects to be included in the curriculum are: Social Studies, General sciences, Art, Music, drawing and Hindustani. He suggested Home science for girls.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

BGI
BHARATHI
Bharathi G[illegible] of Institutions
an abode of education
Vill- Kandri, Post- Mand[illegible] Ranchi-83[illegible]4, Jharkhand
Phone No. 8676961116 Mo[illegible]116, 9334441116

60/80

lege Name : Bharathi college of Education

ne of Examination : B.ED (2nd year 3rd Semester)

e of Student विद्यार्थी का नाम Nisha Choubey

Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 09

ect विषय Knowledge and curriculum Session सत्र 2021-23

पत्र C8

तिथि 09/01/23 Script लिपी ROMAN

Period घंटी 1st

Invigilator's signature 09/01/23

Ans:- ① Meaning of curriculum
② Definition of curriculum.
③ Principle of curriculum
④ Conclusion

Meaning of curriculum :- curriculum is the race of curren and the content matter of subject curriculum is the advise and the part of curriculum.

Curriculum makes a systematic process of syllabus and throughout the learning process. curriculum is the advocated of the race of examination of the curriculum. It is the part of learning.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

curriculum is the co-curricular activities of the syllabus and the part of curriculum.

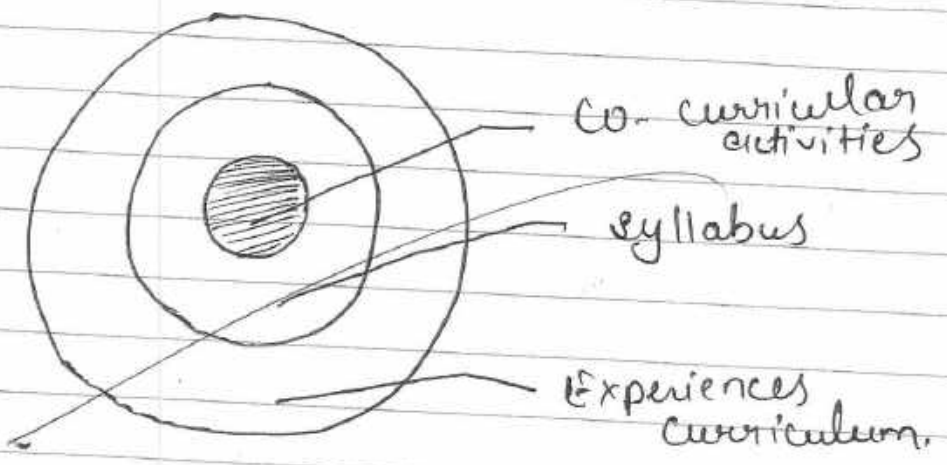

Curriculum.

- Co-curricular activities of the justify of Internal talent of the pupils. and it is organized by the curriculum. It is the just equated by the curriculum.
- Syllabus is the part of new invention and short time period but it justify the curriculum.
- Experiences curriculum is the obtained by the logically and experience day by day increasing yourself not the other effort.

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Definition of curriculum :—

- According to philospher "curriculum is the brad and easier concept of learning."
- According to plato " curriculum is the naduralish'c of the dimensions of the according situation dynamic.
- According to the philospher curriculum is the against of the learning and It is the part of curriculum.
- According to philosopher curriculum, is the dynamic and It creation of curriculum.

curriculum.
- Explosion of Knowledge.
- Intellectual power.
- Mental ability
- Experiences.

these are the content of the making a curriculum.

Principal
Bharathi College of Education,
Kandri, Mandar, Ranchi

Principle of curriculum :—

curriculum is the defining of the nationalisam and secularisam. It is just acquire the part of curriculu It is the just part of the organisation and it include all the curriculum. and yet the curriculum is partition of the curriculum.

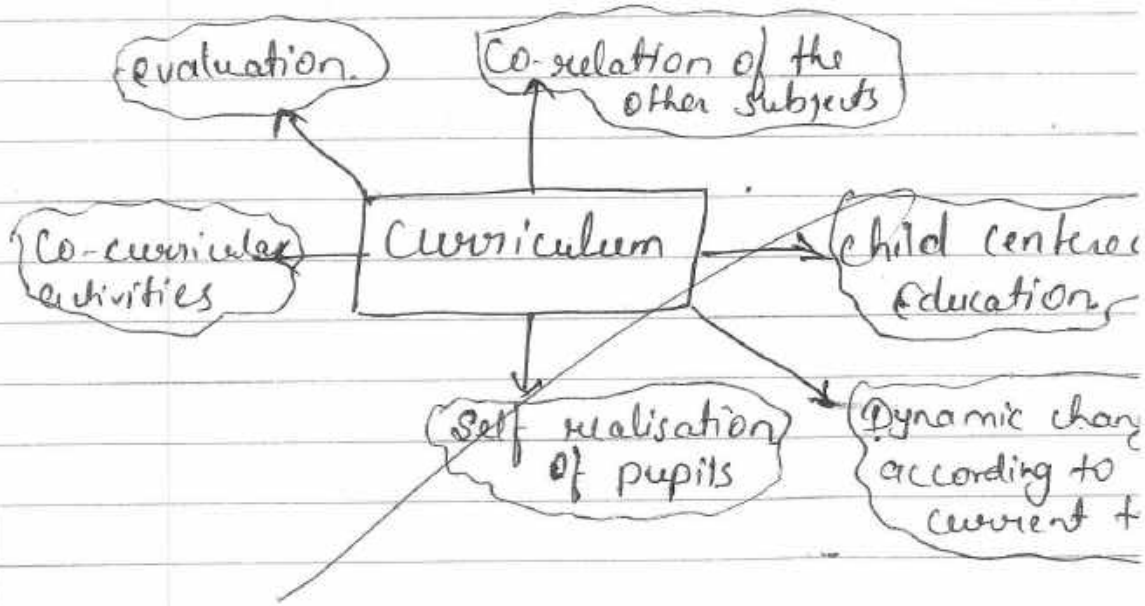

① Co-relation of the other subjects :— In Curriculum decided to connect the other subjects and the other topic to co-relate. because of Development o pupils. through the curriculum.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(2) child centered education :— In curriculum is the principle of child centered education. Curriculum design go through the pupils' needs. to the focusing and Succesing of the pupils life.

(3) Dynamic changes according to current trends
In curriculum principle of Dynamic changes of curriculum, through the current Syllabus. and current procedures of the curriculum.

(3) self realization of pupils :— In curriculum, pupils get the self maine festation of the life. and totally acquire the self purpose of the knowing yourself. and itself.

(4) co- curricular activities :— In curriculum describe the co- curricular activities and It justify the curriculum. It is the, power of invention of the co- curricular activities of the curriculum.

(5) evaluation :— last is one of the evaluation. what is the point and getting the some, acquisition of topic is evaluation of the topic

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Conclusion:— we have discussed all the meaning and definitions of curriculum.

It is the just acquire the suffocate knowledge, and it is the part of knowledge and curriculum. It is the obtaining all the factors of learning and curriculum.

- curriculum is the important for next generation to generation because of the future of country is ~~next~~ pupils.
- It is important for the intrest Development and all the development

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Qno-2 Ans :— ① Meaning of curriculum & design.
② Role of curriculum design.
③ meaning of time table
④ Importance of time table
⑤ conclusion

Meaning of curriculum :— Curriculum is the defined latin word 'currer' which means race and culum is the race of the part.

It is the very important part of teaching .. It defined the knowledge of pupils. and it is the part of knowledge.

Meaning of curriculum design :— Curriculum design means designing the curriculum. How to make better than far. So, It just part of curriculum and all the inventions of curriculum. so, it is the part of curriculum.

Curriculum design means the designing all the other things and very easily way in curriculum. to understand that all the topic.

In other word we can say that curriculum is the define of the sector of curriculum.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Role of the curriculum design :—

In curriculum. very important role of In curriculum design. It is the part of curriculum all that the part of curriculum.

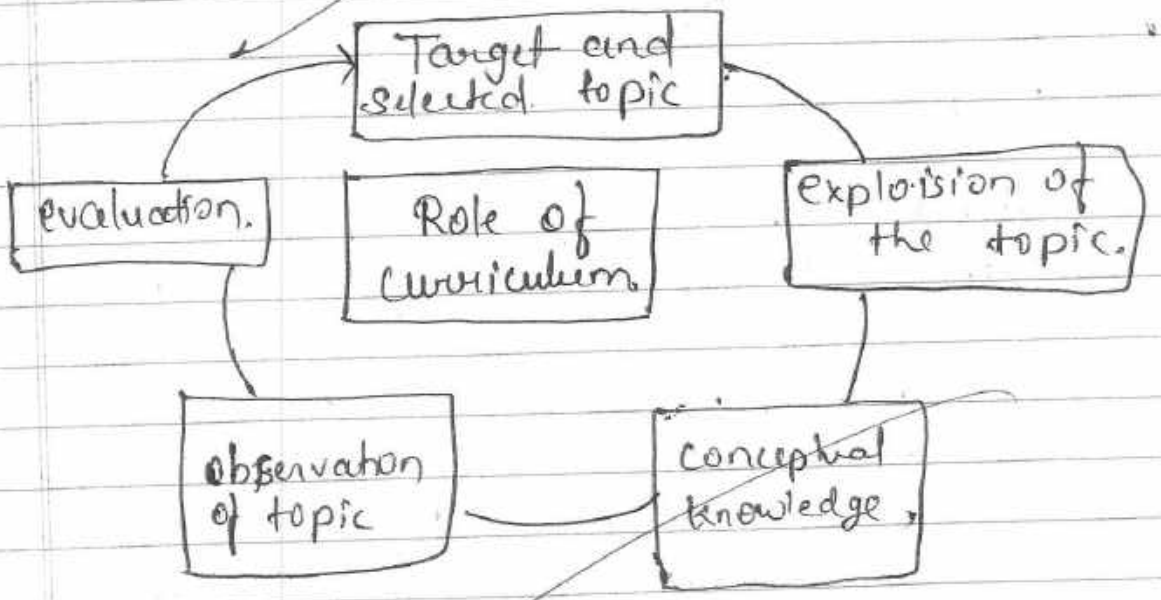

① Target and selected topic :— In Curriculum. firstly the role of Curriculum is targeted the topic and decided how to make and. How to understand these topic so, the topic is consideration of the, actual process. of the curriculum.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

② Exploision of the topic :— In curriculum. is the part of curriculum is 2ndly role of curriculum the explore the topic. what is the topic and How to make of the topic related question of the curriculum.

③ conceptual knowledge :— In curriculum. It is the thirdly part of conceptual. knowledge. It is differ from the explitation. It is the clarity of knowledge, and then curriculum design. in the leaning, So, that is the part of curriculum.

④ Observation of topic / knowledge :— In curriculum. the observe the topic and How to make the party and the Creation of the knowledge. and it makes the observation of the topic and then the make curriculum design. It is the submission of the co-curricular activities because of development of mental ability,

⑤ Evaluation :— lastly role in curriculum design is evaluate the suffocate knowledge, and How to make the curriculum designing

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

and Its justiable of the part of curriculum and evaluate the, method of curriculum design.

Time table

Meaning of time table :— Time table is routine and make sure the follow. time table.

In other word we can say that time table is the systemabic way in work of time according to given time. so, It is the just of the purpose of time table.

- Time table making for a done a work in systemabic way.
- Time table is doing and making for the purpose of discipline.
- Time table is making for the purpose of busiest and doing systemabically way.
- Time table making for the long time period because of doing work in long num in very systematically.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Importance of Time table :—

1) time table is very important in school also office because of any work doing in school or office is very systematically because of time table.

2) Time table make a routine and very important in school is followed routine, for discipline and also for doing systematically way.

3) time table is being of the school in the part of time table and the ratio of time table between school and descipline,

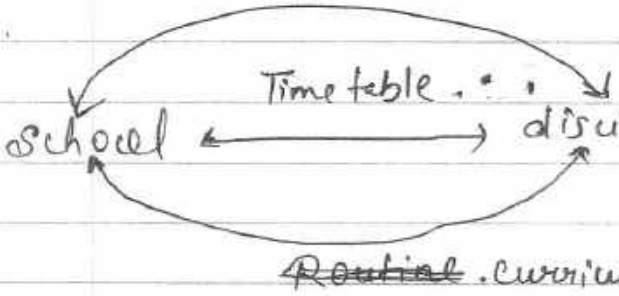

4) Time table is the obtained the maturity and it collaborate of time table in the Syskematically way.

5) time table is doing the process of Scenario of the School and routine, and make the discipline of the curriculum.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Conclusion :- We discussed the topic of role of curriculum design and Time table and also it importance. So, many knowledge to get the point of above. It is only the part of knowledge and curriculum.

It is the discussed How to make curriculum design and also the getting point Time table. we get the all things and reached the all the above knowledge. to gain the Knowledge. through the curriculum.

12

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Basic education of Gandhi ji :-

Basic education of Gandhi is the self realisation and self disabled the life. and it also the part of education. so, it just the part of education system.

Basic education of Gandhi ji was the priority of education. and its implementation of the Gandhi. so it clarity of our the, nation. and many types of wk in education system.

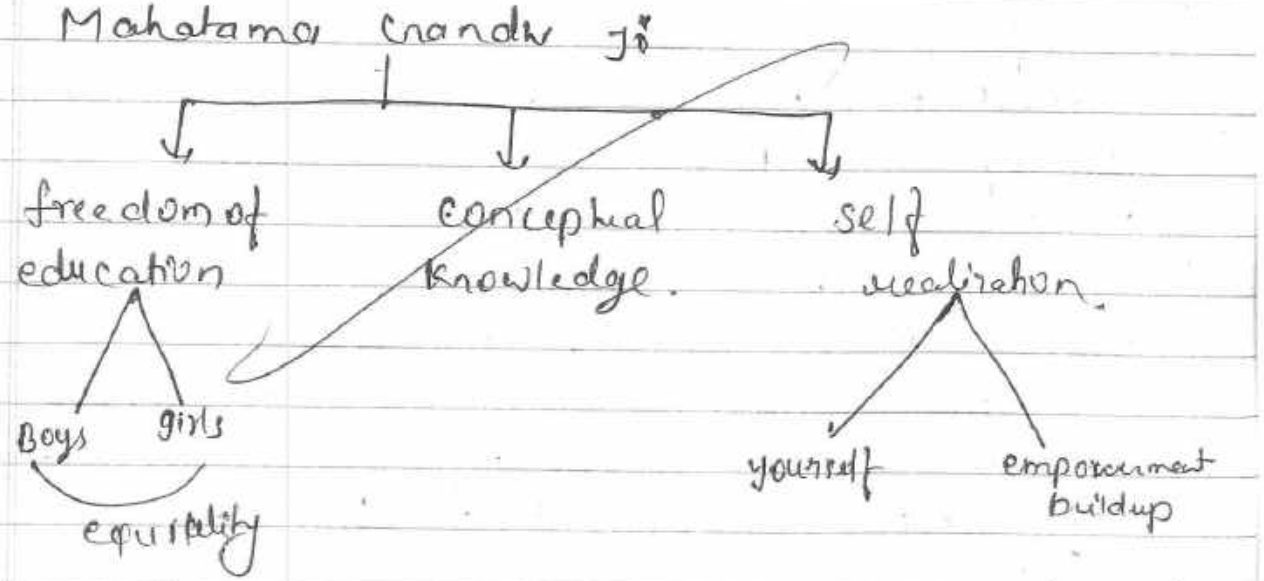

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Principles of Basic education According to Gandhi Ji :—

Many types of education Aim and Role of the Gandhi Ji given and it measures the process of education. and the principles of education System. According to Gandhi Ji

(1) Bread and Butter :— According to Gandhi Ji education is the Bread and butter It is defined the type of mahatma Gandhi.

Teacher ⟷ Students

(2) Self realization :— According to mahatma Gandhi Basic of education is self realization and its itself : According to him education is the part of realization to Internal power. knowing the part of education.

(3) freedom :— everyone gives freedom to the students and it is the part of education to choose subject and all that is the freedomality of the education and also the content.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(4) Education is Bipolar :— According to Gandhi-Ji education is Bipolar. and it regarding all the manner of the education. It is the just part of combination of Teacher and students.

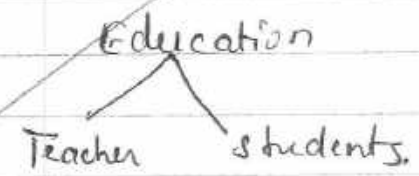

(5) Education is Expliosion :— According to Gandhi Ji education is expliosion and explor the knowledge and itself. It is the part of education It is the dividing of the Co- curricular activities.

(6) Education is Development :— According to Gandhi Ji education is Development. It means education also the process of Development. and Development is the part of education.

education is the moral and also soical Development.

(1) Moral Development
(2) Soial Development

all the many Development talking the Gandhi Ji in education ~~ed~~ system.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ADDITION SHEET

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION, KANDRI, MANDAR, RANCHI (JHARKHAND)

ıe of student विद्यार्थी का नाम Nisha Choubey Bharathi College of education

s Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 09 Session सत्र 2021 - 23

ect विषय knowledge and curriculum

र / पत्र C8 Script / लिपी Roman

/ तिथी 09/01/22 Period / घाली 1st

Invigilator's Signature

(7) Spiritual Development :— According to Gandhi Ji spiritual Development is basic need for pupil because of education is not temprory and not boolcirt. Its Development for all the Domains of education.

(8) Education is process :— According to Gandhi Ji education is process and it combined all the time and done by the systematically way. so education is the process.

(9) Education is the content :— According to Gandhi Ji education is the content its always the part of knowledge, and it differ from the content and process. It is the reliable of the education and it content of the education.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Conclusion :— we discussed about the Gandhi Ji and also the Basic of education. according to Gandhi ji and also the principles of education.

In other word we can say that Gandhi Ji opinion was very frank for the education. It symbols the freedom. education means freedom. It is the part of education. Its not only the booklet It is the part of education to Development for the every Domains of Development. It is the basic of differences of education and Teacher and role of the teacher in School. also the very good. image. according to gandhi Ji.

Bharathi College of Education
Kanchi, Mandar, Ranchi

10-6 Ans :- ① Introduction of vivekananda.
② what is education according to vivekananda.
③ What is the thoughts of vivekananda in education.
④ Conclusion.

Introduction of ~~Vivekanda~~ vivekananda :-
vivekananda was most eligible and most relevant personality in India.

He was born in 12 January 1863. He was a greatest man in India. In education sector also the main role play in India. vivekananda was a star and news a days. He is a also a gretest man.

He was doing diffrent - different work in a different sector. So, He was a great man in India..

Swami means controlling the all organ senses. and vivek means wisdom. It means king of senses. vivekananda was a evolution of education sector. and also 12 january celebrated like a youth day. because Swami was a also youth. and He was a great evolutionary in India.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

ADDITIONAL SHEET

BHARATHI COLLEGE OF EDUCATION
KANDRI, MANDAR, RANCHI (JHARKHAND)

Name of student विद्यार्थी का नाम Nisha choubey Bharathi ~~College of Education~~

Class Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 09 Session / सत्र 2021-23

Subject विषय Knowledge and curriculum

Paper पत्र C8 Script / लिपी Roman

Date / तिथी 09/01/23 Period / पाली 1st

Invigilator's Signature

Educational thoughts of vivekananda :-

Swami vivekananda talk about the spirituality and materialistic. So He focused both of the in education.

It is the part of secularisam and nationalisam.

Swami Vivekananda thoughts

- Self realization
- self manifestation
- Education is natural.
- Education virtue
- Education is social
- Education is teach Humanities.
- education is spontaneous
- education is moral

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Curriculum is the almost of the part of syllabus. but It is the changeble proces of curriculum.

- Meaning of Syllabus :— Syllabus means the all the content and all the subject apolorize. the content of matter. It is dynamic change of syllabus. It is the creation of very short time as compare to curriculum. syllabus is the part of curriculum. not curriculum.

- Relationship between curriculum and syllabus.

Curriculum	Syllabus
(1) curriculum is the broad concept as compare to syllabus	syllabus is the narrow concept as compare to curriculum.
(2) curriculum is the, basic concept of learning. in teaching.	syllabus is the mannual, as compare to curriculum.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(3) Curriculum is the, partly not divided. in teaching.	Syllabus is partly divided in learning from the teacher.
(4) Curriculum is the. diverse and change.	Syllabus is fixed.
(5) Curriculum is the change according to current trends.	But In Syllabus is not changeble according to current trends.
(6) Curriculum is maintained from the Centric	Syllabus is not
(7) Curriculum is officially changeble and it create new Invention.	Syllabus is also officially and it create new
(8) Curriculum is the derived curver. is race from latin word	Syllabus is part of curriculum.
(9) Curriculum is dynamic according to current trends and news.	Syllabus is the authentic. and fixed.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi College of Education
an abode of education

ADDITIONAL SHEET

e of Student विद्यार्थी का नाम Nisha chobey

Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 09 Session सत्र 2021-23

ct विषय Knowledge and curriculum

r पत्र C8 Script लिपी Roman

तिथि 09/01/23 Period पाली 1st

Invigilator's Signature

(C) Knowledge and school

① Meaning of knowledge
② Meaning of school.
③ Difference between knowledge and school
④ conclusion.

Meaning of knowledge :— Knowledge is the part of curriculum. It is defined from the curriculum. Knowledge is the basic concept of knowledge. Knowledge gain the other resources and like school, colleges institutes also.

Knowledge is the part of curriculum. It is justify the basic manner of knowledge.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(2) Knowledge is ~~the~~ have no time duration to gain knowledge.	In School have a time duration to gain knowledge.
(3) there is unfixed	there is fixed.
(4) Knowledge is not ~~professionally~~ take a plan and gain knowledge	In school it's proffesionally take a plan and also gain knowledge.
(5) Knowledge is the itself no one can teach.	In school you have a teacher to gaining knowledge.
(6) Knowledge is the dynamic. It is changeble	In school knowledge is the fixed not flexible.
(7) Knowledge is the varient of the.	In school. knowledge is constant.
(8) Knowledge is some diversal and ~~not~~ you gain everywhere	But In school you can't be gain knowledge everywhere.

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi Group of Institutions
an abode of education
Vill- Kandri, Post- Mandar, Ranchi-835214, Jharkhand
Phone No. 8676961116 Mob. 09973141116, 9334441116

College Name : Bharathi College of Education

Name of Examination : B.Ed 2nd year 4th Sem

Name of Student विद्यार्थी का नाम Madhumika Kujur

Class Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 10 Session सत्र 2021-23

Subject विषय Assessment for Learning

Paper पत्र C-9 Script लिपि देवनागरी

Date तिथि 11/7/2023 Period पाली 1st

52/80

11/7/23
Invigilator's Signature

8) Correlation

X	R_1	Y	R_2	$d = R_1 - R_2$	d^2
30	7	50	7	0	0
56	3	35	10	-7	49
20	9	77	2	7	49
65	1	55	6	-5	25
42	6	58	5	1	1
33	8	75	3	5	25
44	5	60	4	1	1
50	4	45	8	-4	16
15	10	80	1	9	81
60	2	38	9	-7	49

$N = 10$ $\Sigma d^2 = 296$

$\Sigma d^2 = 296$

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

$Q_1 \quad L_1 + \frac{L_2 - L_1}{f} \cdot (q_1 - c)$

7.) Q

C.I	f
65 - 69	3
60 - 64	3
55 - 59	3
50 - 54	4
45 - 49	6
40 - 44	4
35 - 39	4
30 - 34	3
25 - 29	2

25.0
0.5
.5

लर ⇒

C.I	f	cf
64.5 - 69.5	3	32
59.5 - 64.5	3	29
54.5 - 59.5	3	26
49.5 - 54.5	4	23
44.5 - 49.5	6	19
39.5 - 44.5	4	13
34.5 - 39.5	4F	9
29.5 - 34.5	3	C5
24.5 - 29.5	2	2
	N=32	

$\Rightarrow q_1 = \frac{N}{4} \quad \frac{32}{4} \quad 8$

$q_1 = 8$

∵ 8 cf (संचयी आवृति का) 9 में शामिल है इसलिए 34.5 - 39.5 होगा

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

$L_1 = 54.5$

$L_2 = 59.5$

$F = 3$

$C = 23$

$q_3 = 24$

$$\boxed{Q_3 = L_1 + \frac{L_2 - L_1}{f}(q_3 - c)}$$

$$\Rightarrow Q_3 = 54.5 + \frac{59.5 - 54.5}{3}(24 - 23)$$

$$\Rightarrow Q_3 = 54.5 + \frac{5}{3} \times 1$$

$$= 54.5 + \frac{5}{3}$$

$$= 54.5 + 1.66$$

$$Q_3 = 56.16$$

$$\therefore \boxed{Q.D = \frac{Q_3 - Q_1}{2}}$$

$$Q.D = \frac{56.16 - 38.25}{2}$$

$$Q.D = \frac{17.91}{2} \qquad \frac{1791}{200}$$

$$\boxed{Q.D = 8.955 \text{ Ans}}$$

200)1791(8.955
1600
1910
1800
1100
1000
1000

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

6)

C.I	C.I	f	M.V(x)	dx=x-A	fdx
61-65	60.5-65.5	3	126	40	12
56-60	55.5-60.5	6	116	30	180
51-55	50.5-55.5	15	106	20	300
46-50	45.5-50.5	25	96	10	250
41-45	40.5-45.5	13	(86) A	0	0
36-40	35.5-40.5	10	76	10	-100
31-35	30.5-35.5	9	66	20	-180
26-30	25.5-30.5	4	56	30	-120
21-25	20.5-25.5	5	46	40	-200
		N=90			+850-600
					Σfdx = 250

Mean

$\Rightarrow N = 90$

$\Rightarrow \Sigma f dx = 250$

$$\therefore \boxed{\bar{X} = \frac{\Sigma f dx}{N}}$$

$$\Rightarrow \bar{X} = \frac{\Sigma f dx}{N}$$

$$\bar{X} = \frac{250}{90}$$

$$\boxed{\bar{X} = 2.77 \text{ Ans}}$$

9) 2 5 (2.77
18
70
63
70
63
07

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Median

C.I	f	cf
60.5 - 65.5	3	90
55.5 - 60.5	6	87
50.5 - 55.5	15	81
45.5 - 50.5	25	66
40.5 - 45.5	13	41
35.5 - 40.5	10	28
30.5 - 35.5	9	18
25.5 - 30.5	4	9
20.5 - 22.5	5	5

N = 90

$m = \frac{N}{2}$ $\frac{90}{2}$ 45

∵ 45 cf का 66 में शामिल है इसलिए
45.5 - 50.5 होगा।

$L_1 = 45.5$
$L_2 = 50.5$
$f = 25$
$c = 41$
$m = 45$

Formula

$$\text{Median} = L_1 + \frac{L_2 - L_1}{f}(m - c)$$

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

$$M = L_1 + \frac{L_2 - L_1}{f}(m - c)$$

$$\Rightarrow M = 45.5 + \frac{50.5 - 45.5}{25} \times (45 - 41)$$

$$\Rightarrow M = 45.5 + \frac{5}{25} \times 4$$

$$\Rightarrow M = 45.5 + \frac{20}{5}$$

$$\Rightarrow M = 45.5 + 0.8$$

$$\Rightarrow M = 46.3 \text{ Ans.}$$

7/16

Q.1 [मापन]

परिचय :-

मापन से तात्पर्य यह है कि किसी भी वस्तु का परिणात्मक ज्ञान करने के लिए मापन का उपयोग किया जाता है।

प्राचीन काल से ही मापन का उपयोग किया जा रहा है। हलांकि उस समय मापने का प्रक्रिया कुछ अलग था अर्थात विकसित नहीं था। फिर भी मापन का उपयोग किया जाता था किसी न किसी

Principal
Bharathi College of Education
Kanderi, Mandar, Ranchi

रूप में।

आधुनिक काल में जैसे-जैसे देश, लोग मानव विकसित होते जा रहे हैं तरह-तरह के वैज्ञानिक विधि उभरकर सामने आ रहा है।

उदा० → ● जैसे कि डॉक्टर मापन के लिए थर्मामीटर का उपयोग करता है
● दूधवाला मापने के लिए लिटर का प्रयोग करता है।

[मापन का अर्थ]

मापन शब्द अंग्रेजी का मैजरमेंट का हिन्दी रूपांतरण है। किसी भी चीजों को मापने के लिए एक विशेष प्रकार के चीजों का प्रयोग किया जाता है।
जैसे :- मीटर, थर्मामीटर, लीटर इत्यादि

[मापन का परिभाषा]

विभिन्न विद्वानों द्वारा मापन को अलग-अलग परिभाषा दिया गया है जैसे :-

● विद्वानों के अनुसार "मापन मूल्यांकन का एक आधार है जिसके द्वारा गुणात्मक तथा मात्रात्मक परिणाम निकलकर बाहर आता है।"

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

• विद्वानों के अनुसार "मापन द्वारा किसी भी बच्चों में प्रतियोगिता उत्पन्न किया जा सकता है"

• विद्वानों के अनुसार "मापन एक वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया जाता है।

उक्त परिभाषा के अनुसार हमें यह देखा कि मापन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा बच्चों में प्रतियोगिता उत्पन्न किया जा सकता है जैसे- यदि बच्चों के परिक्षा का फल को बच्चों में बुलाए किया जाए तो जिससे उसमें बच्चा आगे के जीवन में आगे बढ़ने का कोशिश करेगा।

मापन का विशेषताएँ

• मापन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा गुणात्मक तथा मात्रात्मक परिणाम निकाला जा सकता है।

• मापन मूल्यांकन का एक आधार है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

- मापन द्वारा बच्चों में प्रतियोगिता उत्पन्न किया जा सकता है।
- मापन द्वारा बच्चों को जीवन में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है।
- मापन द्वारा कमजोर बच्चों को आगे बढ़ाया जा सकता है।
- मापन द्वारा किसी के कमजोरी को बताया जा सकता है ताकि वह अपना कमजोरी को पहचान कर उसे दूर कर सके।

मापन का उद्देश्य

- मापन का उद्देश्य गुणात्मक तथा मात्रात्मक प्रवृत्ति को बढ़ाना।
- मापन का उद्देश्य अगले वर्ग के लिए प्रेरित करना।
- मापन का उद्देश्य किसी चीज का सही जानकारी देना।
- मापन का उद्देश्य प्रोत्साहित करना।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

मापन का कार्य

- मापन का कार्य चीजों का सटीक जानकारी एकत्रित करना जैसे :- डॉक्टर द्वारा मरीजों को जाँचना और उसके बिमारियों के बारे बताना।

- मापन का कार्य तुलनात्मक प्रवृत्ति उत्पन्न करना। जैसे :- दो बच्चों के बीच किसी चीजों को लेकर तुलना किया जाता है। जिसके परिणाम-स्वरूप बच्चों में प्रतियोगिता उत्पन्न होता है।

- मापन का उद्देश्य परिणाम उत्पन्न करना। जैसे :- परिक्षा का फल निकालने मर्यादा परिक्षा का मुल्यांकन करना जिसके परिणामस्वरूप बच्चों के सीटवेन की प्रवृत्ति में वृद्धि हो रही है या दिखर है जिसके बारे पता चल सकता है।

मापन = मुल्य + अंकन

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

विभिन्न प्रकार के मापन स्केल

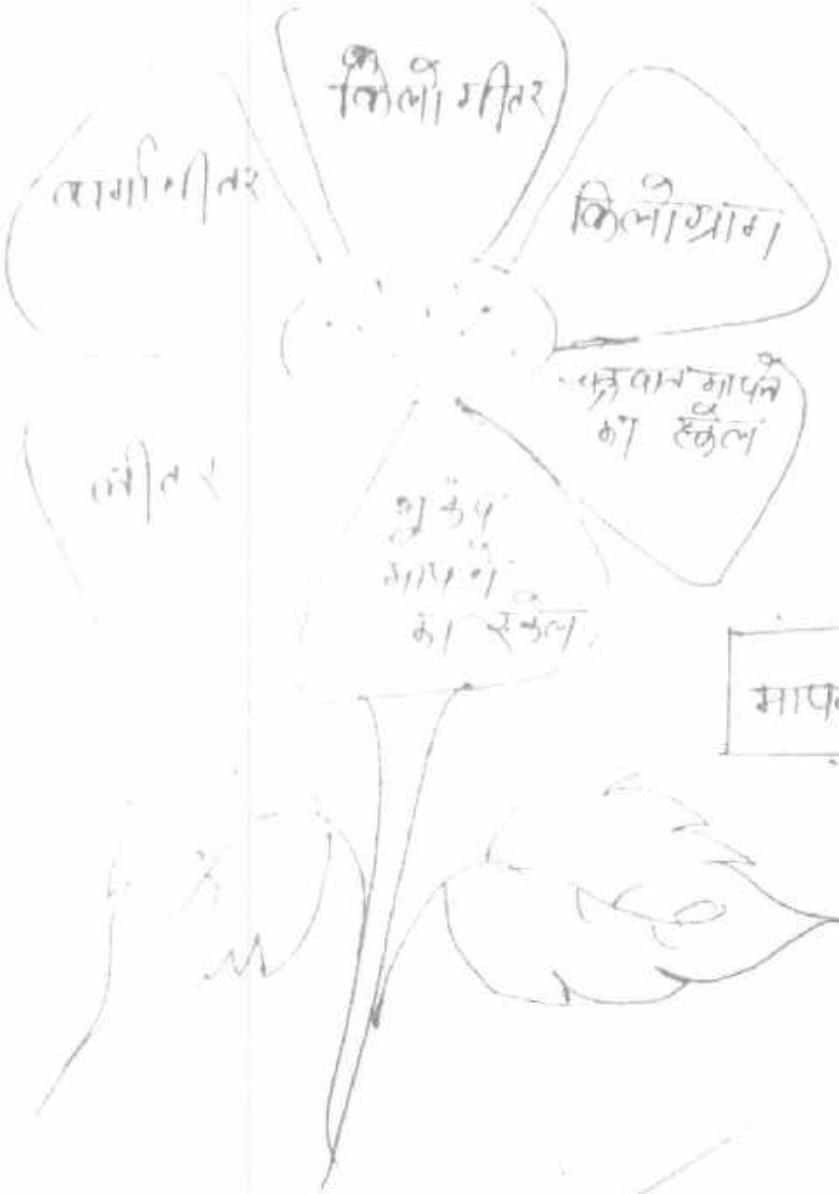

मापन = मूल्य + अंकन

- लम्बाई मीटर :- ~~लम्बाई मीटर~~ एक ऐसा वस्तु है जिसका ~~लम्बाई~~ का उपयोग डॉक्टर करते हैं। तथा ये मरीज का ऊंचाई

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

मदद से जाँचते हैं। जिसका परिणाम यह होता है कि मरीजों में किस बिमारी है उसके बाद में पता चलता है।

- किलोमीटर : किलोमीटर दूरी मापने का एक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा हम किसी जगह का दूरी माप सकते हैं।
उदा० — मण्डर से राँची की दूरी कितने Km है।

- किलोग्राम : यह एक प्रकार का वस्तुओं के द्वार मापने का प्रक्रिया है। जिसके द्वारा वस्तु की वजन मापा जाता है।
उदा० — 1 Kg आटा
2 Kg चावल इत्यादि

- लीटर : यह वह प्रक्रिया है जिसके मदद से द्रव वस्तुओं को मापा जाता है।
उदा — दूधवाला द्वारा दूध को मापना

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

- पानी को मापना
  1. l दूध
  2. l पानी
- [illegible]

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

2) शैक्षिक और शैक्षणिक उद्देश्य

मानव जीवन के लिए शिक्षा बहुत ही जरूरी है अर्थात् मानव के लिए शिक्षा एक अभिन्न अंग है। शिक्षा के बिना मानव बिलकुल अधूरा है। क्योंकि मानव शिक्षा के बिना जीवन में आगे बढ़ने के बारे में सोच ही नहीं सकता है क्योंकि शिक्षा के बिना उन्हें उचित और सटीक जानकारी प्राप्त हो ही नहीं सकता है। इसलिए मानव जाति के लिए शिक्षा ग्रहण करना अति आवश्यक है। जिसके परिणाम-स्वरूप वे खुद आगे बढ़ सकते हैं साथ ही साथ हमारे देश को भी विभिन्न देशों के मुकाबले आगे बढ़ा सकते हैं। यह सब शिक्षा के द्वारा ही हो सकता है। अन्यथा सब नामुकिन ही।

और शिक्षा ग्रहण करने के भी कई उद्देश्य होते हैं। अपने उद्देश्यों को पूर्ण करने के लिए शिक्षा का अति आवश्यकता है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi College of Education
an abode of education

ADDITIONAL SHEET

विद्यार्थी का नाम Madhumika Kujur
कक्षा एवं क्रमांक 10 सत्र 2021-23
विषय Assessment for Learning
C-9 लिपि devnagri
दिनांक 11/7/2023 पृष्ठ 1st

Invigilator's Signature

[संक्षिप्त परिचय]

शिक्षा मानव जीवन का एक अभिन्न अंग है। शिक्षा बिना मानव जीवन अधूरा है। शिक्षा जीवन भर चलने वाली एक प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया माँ के गर्भ से ही शुरू होती है और मृत्यु तक चलती है।

मानव हर समय हर जगह कुछ-न-कुछ सीखते रहते हैं, और यह प्रक्रिया मृत्यु तक चलते रहती है।

शिक्षा दो प्रकार की होती है

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

प्रथम प्रकार में विद्यालयी शिक्षा जिसमें किसी खास जगह पर शिक्षा ग्रहण कराया जाता है।

उदाहरण :- विद्यालय, महाविद्यालय इत्यादि

दूसरा प्रकार - अनौपचारिक शिक्षा जिसमें कहीं भी शिक्षा ग्रहण किया जा सकता है। घर में घर से बाहर

शिक्षा

औपचारिक शिक्षा | अनौपचारिक शिक्षा

[शैक्षिक उद्देश्य]

शैक्षिक उद्देश्य से तात्पर्य है शिक्षा ग्रहण करने का उद्देश्य क्या है। किस उद्देश्य से शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं और कि अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा ग्रहण करना ही शैक्षिक उद्देश्य कहलाता है।

उदा० — IAS बनना (यदि किसी बालक को IAS बनना है तो वह उसी के अनुसार

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शिक्षा ग्रहण करेगा। यदि वह डॉक्टर बनना है तो वह इसी से संबंधित विषय से ज्ञान अर्जित करेगा।

इस प्रकार हमने शिक्षा और शैक्षिक उद्देश्यों के बारे में देखा जिसमें यह देखा कि उद्देश्य के बिना शिक्षा संभव नहीं है तथा शिक्षा के बिना उद्देश्य की प्राप्ति हो ही नहीं सकती।

शिक्षा और शैक्षिक उद्देश्य एक दूसरे का पूरक है। होना एक दूसरे के बिना अपरिपूर्ण अर्थात् अधूरा है।

शैक्षिक और शैक्षिक उद्देश्य में अंतर

शैक्षिक	शैक्षिक उद्देश्य
① शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है।	① शैक्षिक उद्देश्य निश्चित है।
② शिक्षा अस्थिर है।	② शैक्षिक उद्देश्य स्थिर है। निश्चित उद्देश्यों की प्राप्ति के बाद यह रुक जाता है।

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

③ शिक्षा औपचारिक तथा अनौपचारिक है।	③ शैक्षिक उद्देश्य मानव को ऊँचाइयों को छूने को प्रेरित करता है।
④ शिक्षा से संबंधित कार्य किया जाता है।	④ शैक्षिक उद्देश्य द्वारा शिक्षा के अलावा किसी भी क्षेत्र के उद्देश्य तक पहुंचा जा सकता है।
⑤ शैक्षिक (शिक्षा) शैक्षिक उद्देश्य की प्राप्ति का एक जरिया है।	⑤ शैक्षिक उद्देश्य शिक्षा का एक छोटा रूप है। अर्थात शिक्षा के बिना उद्देश्य परिपूर्ण करना नामुंकिन है।
⑥ शिक्षा के बीना मानव जानवर के समान है।	⑥ शैक्षिक उद्देश्य के बिना मानव अन्य क्षेत्र में भी कार्य कर सकता है।
⑦ शिक्षा, शैक्षिक उद्देश्य के बिना बेकार है	⑦ शैक्षिक उद्देश्य शिक्षा के बिना अपरिपूर्ण है।

इस तरह से हमने शैक्षिक तथा शैक्षिक उद्देश्यों के बारे में देखा कि शिक्षा जीवनपर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है वही शैक्षिक उद्देश्य शिक्षा प्राप्त करने के बाद प्राप्त करने वाली प्रक्रिया है जिसके परिणामस्वरूप शिक्षा के बिना

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

Bharathi College of Education
an abode of education

ADDITIONAL SHEET

Name of Student विद्यार्थी का नाम Madhumika Kujur

Class Roll No. कक्षा वर्ग क्रमांक 10 मत्र

Subject विषय Assessment of Learning

Paper पत्र Script लिपि Devnagri

Date तिथि Period पाली

Invigilator's Signature

शैक्षिक उद्देश्य अधूरा है। अर्थात् शिक्षा के बिना उद्देश्यों को पूरा किया ही नहीं जा सकता है।

[विभिन्न प्रकार के शैक्षिक उद्देश्य]

(1) आत्मनिर्भर बनना
(2) आत्मविश्वास बढ़ाना
(3) देश को आगे बढ़ाना
(4) जीवन में ऊँचाइयों को छुना
(5) सतत विकास करना

(1) ज्ञानात्मक → ज्ञान, बोध, विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक
(2) भावनात्मक → मूल्यांकन, आग्रह
(3) क्रियात्मक → क्रिया करना

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

(2) आत्मनिर्भर बनना :- शैक्षिक उद्देश्यों के मदद से खुद को आत्मनिर्भर बनाया जा सकता है।

(2) आत्मविश्वास में वृद्धि :- शैक्षिक उद्देश्यों की मदद से खुद में आत्मविश्वास वृद्धि किया जा सकता है।

(3) देश को आगे बढ़ाना :- शैक्षिक उद्देश्यों के मदद से देश को अन्य देशों से आगे लाया जा सकता है।

(4) ऊँचाइयों को छूना :- शैक्षिक उद्देश्यों के मदद से अपने जीवन में के बड़े बड़े ऊँचाइयों को छूना जा सकता है।

(5) शैक्षिक उद्देश्यों द्वारा शैक्षिक क्षेत्र को विकसित करना :- शिक्षा के मदद से शिक्षा क्षेत्र को और भी विकसित किया जा सकता है तथा विभिन्न प्रकार के शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

इस प्रकार हमने देखा कि शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। तथा हमने शैक्षिक उद्देश्यों के बारे में भी देखा जिसमें हमने विभिन्न उद्देश्यों के बारे में विस्तार पूर्वक वर्णन किया है।

हमने यह भी देखा कि शिक्षा और शैक्षिक उद्देश्य में क्या अंतर है।

हमने शिक्षा के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन किया है तथा हमने शैक्षिक उद्देश्यों के बारे में भी वर्णन किया है।

हमने यह देखा कि किस तरह से शिक्षा प्राप्त करके विभिन्न प्रकार के शैक्षिक उद्देश्यों को पूरा किया जा सकता है अर्थात शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।

तीन प्रकार के शैक्षिक उद्देश्य है जैसे भावात्मक ज्ञानात्मक तथा क्रियात्मक ये उद्देश्य निम्नलिखित हैं :-

Principal
Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi

शैक्षिक उद्देश्य

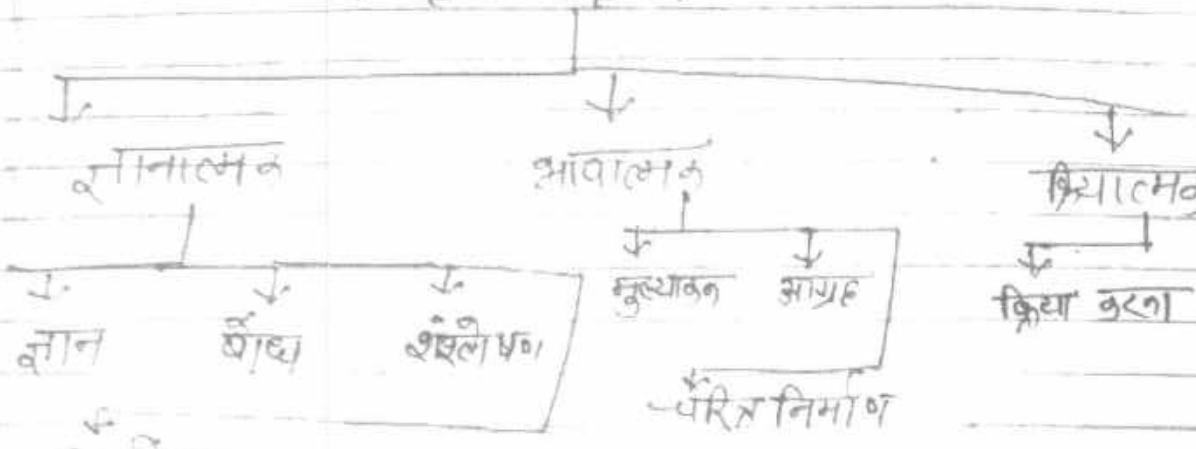

ज्ञानात्मक

① ज्ञान :- ज्ञान अर्जन करना

② बोध :- ज्ञान का बोध करना

भावात्मक

① मूल्यांकन :- मूल्य का आंकन करना

② चरित्र निर्माण :- चरित्र का निर्माण करना

क्रियात्मक

① क्रिया करना :- क्रिया करना

निष्कर्ष :- इस प्रकार हमने विभिन्न शैक्षिक उद्देश्यों के बारे में विस्तारपूर्वक वर्णन किया जिसमें हमने देखा कि तीन प्रकार के उद्देश्य हैं ज्ञानात्मक, भावात्मक और क्रियात्मक।

Bharathi College of Education
Kandri, Mandar, Ranchi